ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मासिक

मार्च+अप्रैल-२०२३

मार्च+अप्रैल-२०२३ ◆ वर्ष ११ ◆ अंक ११-१२ ◆ उदयपुर

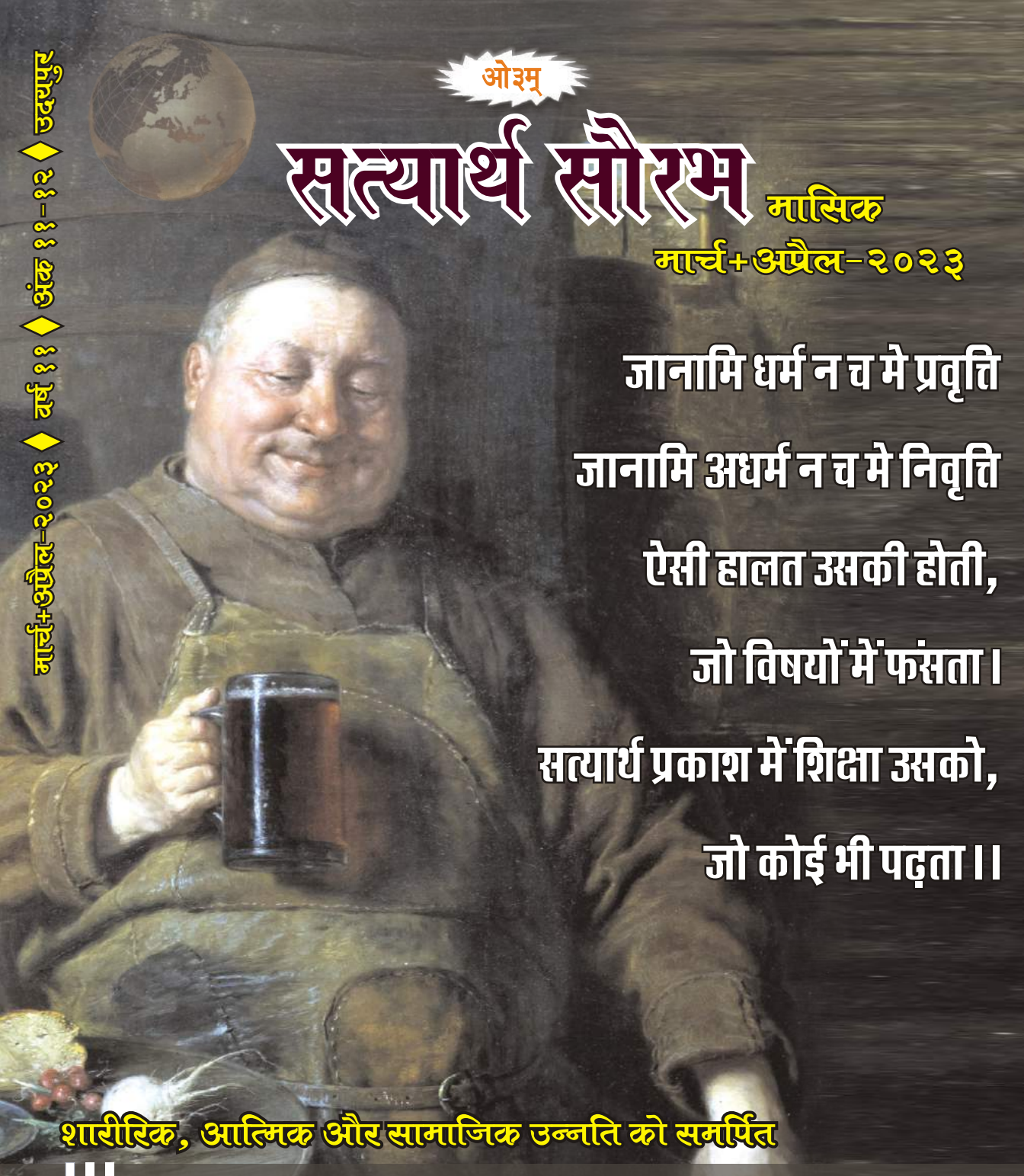

जानामि धर्म न च मे प्रवृत्ति
जानामि अधर्म न च मे निवृत्ति
ऐसी हालत उसकी होती,
जो विषयों में फंसता।
सत्यार्थ प्रकाश में शिक्षा उसको,
जो कोई भी पढ़ता।।

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹१५

१३७-३८

अच्छी सोच

अच्छा खाना आपको स्वस्थ और कामयाब बनाता है।

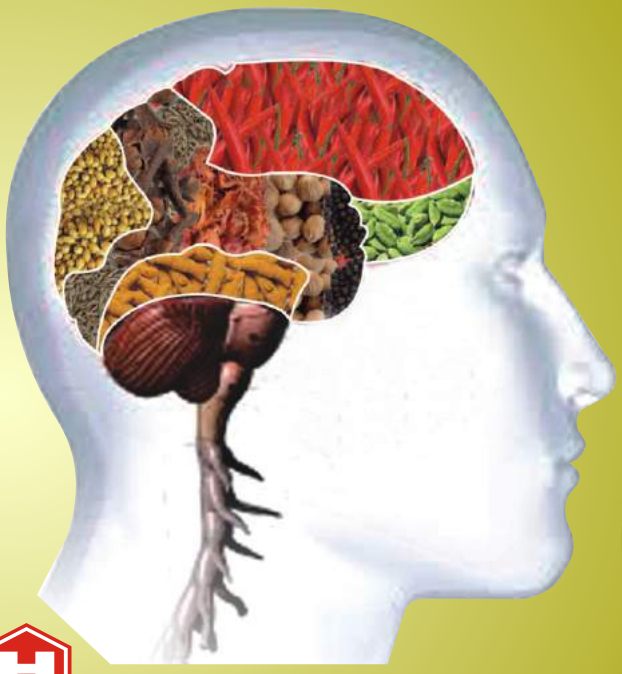

MDH

मसाले

सेहत के रखवाले असली मसाले सच - सच

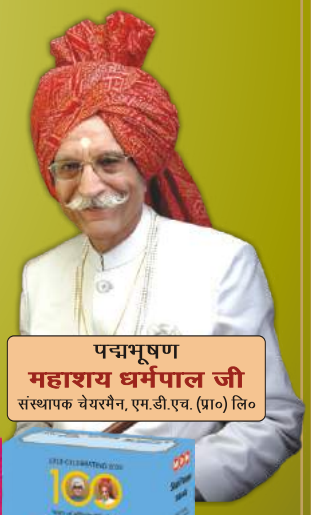

पद्मभूषण
महाशय धर्मपाल जी
संस्थापक चेयरमैन, एम.डी.एच. (प्रा०) लि०

For More Information Visit us on :

mdhspicesofficial | mdhspicesofficial | mdhspicesofficial | SpicesMdh

www.mdhspices.com

SCAN FOR MDH ORIGINAL RECIPES

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक – सत्यार्थ सौरभ

डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमाँसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग (ग्राफिक्स डिजाईनर)

नवनीत आर्य (मो. 9314535379)

व्यवस्थापक

भँवर लाल गर्ग

सहयोग ◆	भारत	विदेश
संरक्षक	- 11000 रु.	$ 1250
आजीवन	- 1500 रु.	$ 300
पंचवर्षीय	- 600 रु.	$ 125
वार्षिक	- 150 रु.	$ 30
एक प्रति	- 15 रु.	$ 10

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच दिल्ली गेट, उदयपुर
खाता संख्या : 310102010041518
IFSC CODE- UBIN 0531014
MICR CODE- 313026001
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३१२४
वैशाख कृष्ण प्रथमा
विक्रम संवत्
२०८०
दयानन्दाब्द
१९९

March+April - 2023

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर 2 व 3 (भीतरी आवरण) रंगीन 5000 रु.

अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	3000 रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	2000 रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	1000 रु.

न्यास समाचार १९

समाचार ३०

०४ वेद सुधा
०६ तपस्थली ऋषि दयानन्द की
०७ सत्यार्थ मित्र बनें
१२ होलिकोत्सव
२० गंगा अशुद्ध हो गई है
२३ अनुकरणीय दान
२४ स्वदेशी के प्रबल समर्थक म.द.स.
२६ संस्कृति या विकृति
२८ कथा सरित
२९ सत्यार्थप्रकाश पहेली- १२/२२

स्वामी — श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - ११ | अंक ११-१२

मुद्रण — द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक
श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर (राजस्थान) 313001
(0294) 4017298, 09314535379, 7976271159
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर–313001 से प्रकाशित, सम्पादक–अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

वेद सुधा

विद्या का नाश नहीं होता

न ता नशन्ति न दभाति तस्करो नासामामित्रो व्यथिरा दधर्षति।
देवांश्च याभिर्यजते ददाति च ज्योगित्ताभिः सचते गोपतिः सह।। - अथर्ववेद ४/२१/३

ताः न नशन्ति- वे नष्ट नहीं होतीं, **तस्करः न दभाति-** चोर नहीं दबाता है। **व्यथिः अतित्रः-** दुःखदायी शत्रु (भी), **आसाम न+दधर्षति-** इनका तिरस्कार नहीं कर सकता। **याभिः=**जिनके द्वारा, **देवान् यजते-** देवयज्ञ करता है, विद्वानों का सत्कार और सत्सगंति करता है। **च ददाति-** और दान करता है। **गोपतिः-** इन्द्रिय-स्वामी जीवात्मा, **ज्योग्=**निरन्तर, **ताभिः सह-** उनके साथ, **सचते=**सम्बद्ध रहता है।

व्याख्या

इस मन्त्र में विद्या के गुणों का वर्णन और विवेचन है।

मनुष्य जो कुछ देखता-सुनता है, उस सबका संस्कार उसके आत्मा पर पड़ता है। साधारण रीति से यही भासता है कि जो कुछ हम देख-सुन रहे हैं वह क्रिया उतने ही समय के लिए है, जितने समय तक वह देखने-सुनने का कर्म चल रहा है, क्योंकि ऐसा भी होता है कि हमने किसी स्थान विशेष में कोई वस्तु देखी, देखकर हम चले आये। फिर उसका कोई विचार नहीं उठता, किन्तु कभी-कभी सहसा अथवा किसी कारण से उसकी स्मृति जाग खड़ी होती है। यह कैसे होता है? देखने की क्रिया तो कभी की नष्ट हो चुकी। अब फिर उसके सम्बन्ध में यह स्मृति कैसे उत्पन्न हुई? मानना पड़ता है कि जो कुछ हम देखते-सुनते हैं, उस सबका एक संस्कार आत्मा पर पड़ता है, जो अनुकूल साधन पाकर स्मृति के रूप में जाग खड़ा होता है। भाव यह निकला कि हमारी सारी क्रियाओं=चेष्टाओं की आत्मा पर एक अमिट-सी छाप पड़ती है, जिसका मिटाना सरल नहीं है।

विद्या-ग्रहण करना भी एक क्रिया है, चेष्टा है। उसकी भी आत्मा पर छाप पड़ती है, संस्कार पड़ता है और वह संस्कार अमिट-सा है। इसलिए वेद ने कहा-

न ताः नशन्ति। वे विद्या की छापें नष्ट नहीं होतीं।

संसार का धन, प्राकृतिक-सम्पत्ति, भौतिक ऋद्धि काल पाकर नष्ट हो जाती हैं। जहाँ संयोग है, वहाँ वियोग अवश्यंभावी है। धन-सम्पत्ति आज एक के पास है। कल वह चला, चंचला उसे छोड़कर दूसरे के पास चली जाती है। वेद ने बहुत सुन्दर शब्दों में कहा भी है-

ओ हि वर्तन्ते रथ्येव चक्रान्यमन्यमुपतिष्ठन्त रायः। - ऋग्वेद १०/११७/५

धन तो रथ के पहियों की भाँति लोट-पोट होते रहते हैं और दूसरों-दूसरों के पास जाते रहते हैं।

आज एक धनी है कल वही निर्धन है। धन सांयौगिक पदार्थ है, सांयौगिक का वियोग होकर ही रहता है, किन्तु विद्या का नाश कैसे हो, वह आत्मा का गुण है। धन सांयौगिक है, चोर उसे चुरा सकता है, किन्तु विद्या को-

न दभाति तस्करः- चोर नहीं दबा सकता, डाकू नहीं छीन सकता।

मानो इस मन्त्र के इस चरण का अनुवाद ही किसी कवि ने किया है-

हर्तुर्न गोचरं याति दत्ता भवति विस्तृता।
कल्पान्तेऽपि न या नश्येत् किमन्यद्विद्यया समम्।।

चोर की दृष्टि में आती नहीं और देने से बढ़ती है, सृष्टि-नाश होने पर नष्ट होती।

विद्या के तुल्य ऐसी और कौन वस्तु हो सकती है?
किसी विरोधी शत्रु का क्या सामर्थ्य जो विद्वान् को दबा सके या विद्या का तिरस्कार कर सके-
नासामामित्रो व्यथिरा दधर्षति।
कोई दुःखदायी शत्रु विद्या का नाश नहीं कर सकता। विद्या के बल से मनुष्यों में उत्तमोत्तम श्रेष्ठ गुणों का विकास होता है, विद्या के कारण महाविद्वानों, ज्ञानियों की सगंति में बैठने की योग्यता प्राप्त होती है। विद्यादान के कारण उसके पास गुणग्राही सज्जनों का सदा जमघट रहता है और वह उभयतः आदर का पात्र होता है। विद्यावान् और विद्यार्थी दोनों ही वर्ग उसका सत्कार करते हैं। विद्वानों की संगति से उसे दान देने, विद्यादान की उत्तेजना मिलती है और वह देता है। वेद कहता है-
देवांश्च याभिर्यजते ददाति च।
जिनके द्वारा विद्वानों का संग करता है और विद्यादान करता है।
किसी कवि ने मानो इसी मन्त्र-चरण का आशय ही कहा है-
संयोजयति विद्यैव नीचगापि नरं सरित्।
समुद्रमिव दुर्धर्षं नृपं भाग्यमतः परम्।।
जैसे नदी, नीचे जाने वाली नदी समुद्र-जैसे महाशय जलाशय से जा मिलती है। इसी प्रकार विद्या चाहे वह नीच पुरुष में क्यों न हो, वह उस विद्यावान् को राजा से मिला देती है और फिर भाग्य से।
कहीं किसी को भ्रम न हो जाये कि जैसे धन-सम्पत्ति दान देने से घट जाती है, जैसे किसी के पास एक करोड़ रुपये हैं, वह यदि पचास लाख किसी को दे दे, तो उसके पास शेष पचास लाख रह जायेंगे या किसी के पास पचास हजार बीघे भूमि है, उसमें से वह दस हजार बीघे भूमि किसी को दे डाले, तो उसके पास चालीस हजार बीघे शेष रह जायेंगे। इसी प्रकार संसार की दूसरी सम्पत्तियों की दशा है, वे देने से घटती हैं, ऐसे ही विद्या भी दान देने से, बाँटने से घट जाती होगी। वेद इस भ्रम का मानो निरास करता हुआ कहता है-
ज्योगित्ताभिः सचते गोपतिः सह।
ऐसा ज्ञानपति=ज्ञानवान्- विद्या का निरन्तर दान करने वाला ज्ञानधन का धनी-निरन्तर विद्या से सम्बद्ध रहता है, अर्थात् देने से विद्या बढ़ती ही है, घटती नहीं है, अतः विद्यार्जन में पुरुषार्थी होकर विद्यादान में उससे भी अधिक उद्योग करो। वेद कहता है-
शतहस्त समाहर सहस्त्रहस्त संकिर। - अथर्व ३/२४/५
सौ हाथों से कमा और हजार हाथों से बिखेर।
यह वचन कदाचित् विद्या के सम्बन्ध में ही है।
किसी कवि ने विद्या की महिमा गाते हुए कहा है-
ज्ञातिभिर्वण्ट्यते नैव चौरेणापि न नीयते।
दाने नैव क्षयं याति विद्यारत्नं महाधनम्।।
विद्यारत्नरूपी महाजन को सम्बन्धी लोग बाँट नहीं सकते, चोर इस ले जा नहीं सकता, दान से यह नष्ट नहीं होता।
एक दूसरे कवि ने कहा-
न चोरहार्यं न च राजहार्यं न भ्रातृभाज्यं न च भारकारि।
व्यये कृते वर्धत एवं नित्यं विद्याधनं सर्वधनप्रधानम्।।

इसे चोर नहीं चुरा सकता, राजा नहीं छीन सकता, भाई नहीं बाँट सकते, फिर इसका कोई भार नहीं। व्यय करने पर नित्य बढ़ती ही है, अतः विद्यारूपी धन सब धनों में प्रधान है, मुख्य है।

इसलिए विद्या की वृद्धि में सदा उद्योग करना चाहिए, क्योंकि वैदिक धर्म का विद्या के साथ अविनाभाव-सम्बन्ध है। मनु महाराज ने धर्म के दस लक्षणों में विद्या को स्थान दिया है। यथा-

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्।।

धृति=धीरज=हौंसला, कार्य में विघ्न आने पर न घबराना; क्षमा=सहनशीलता; दम=मन को वश में रखना, मन की चंचलता दूर करना; अस्तेय=चोरी न करना, पराये पदार्थ का अनुचित रीति से प्रयोग न करना; शौच=अन्दर बाहर की शुद्धता, इन्द्रिय-निग्रह=इन्द्रियों को वश में रखना, ब्रह्मचर्य; धी=बुद्धि, विद्या=ज्ञान; सत्य=जो पदार्थ जैसा है, उसे ठीक-ठीक जानकर वैसा मानना, कहना; अक्रोध=क्रोध न करना, मन वचन तथा कर्म से किसी को दुःख न देना, अर्थात् अहिंसा।

वेद का मुख्य अर्थ भी विद्या का साधन है। विद्या के बिना मनुष्यत्व रह नहीं सकता, अतः वेद और वेदानुकूल शास्त्र विद्या पर बहुत बल देते हैं।

विद्या के इस महत्व को जान, विद्या के ग्रहण और प्रचार करने में सबको यत्न करना चाहिए।

संकलन कर्त्ता एवं भाष्यकार- स्वामी वेदानन्द तीर्थ
साभार- स्वाध्याय-सन्दीप

तपस्थली ऋषि दयानन्द की

ऋषि दयानन्द की तपस्थली से, सबको स्नेह अपार।
महल नवलखा की धरती को, नमन है बारम्बार।
बोलो ऋषि की जय जयकार।।
आर्यों का यह तीर्थ धाम है, सुन्दर बाग गुलाब,
महाराणा भी ऋषि के ऊपर डाल न पाये दबाव।
सत्यार्थ प्रकाश की रचना करके, किया वेद उद्धार।
बोलो ऋषि की जय-जयकार-2।।
सुनो! उदयपुर वीरभूमि में, एकलिंग की गादी,
नही प्रलोभन कोई उर में, तुरन्त उसे ठुकरादी।
सज्जनसिंह के व्यसन छुड़ाकर, किया बहुत उपकार।
बोलो ऋषि की जय-जयकार-2।।
पुण्य पुनीता इस भूमि से दे सत्यार्थ उजाला,
मंदी छायी धर्म क्षेत्र में, धधक उठी फिर ज्वाला।
परोपकारिणी सभा-वसीयत यहीं हुयी तैयार।
बोलो ऋषि की जय-जयकार-2।।
ऋषि स्वप्न साकार करेंगे, पूरी होगी आस,
तत्त्वबोध जी बना दिए, सत्यार्थ प्रकाश न्यास।
मिशन चल पड़ा ऋषिराज का, सत्य सफल संचार।
बोलो ऋषि की जय-जयकार-2।।
राष्ट्रवाद और धर्मशास्त्र का, झलक दिखाई देता,
लगता है आ गया यहाँ पर, सतयुग, द्वापर, त्रेता।
आज अनेकों प्रकल्पों का, हुआ बहुत विस्तार।
बोलो ऋषि का जय-जयकार-2।।
'सत्यार्थ मित्र' के साथी बनकर,
साथ निभायें हम सब।
पंचमहायज्ञ भी यहाँ सिखाता,
संस्कृत, संस्कृति और संस्कार।
बोलो ऋषि की जय जयकार-2।।
ऋषि दयानन्द द्विशताब्दी जन्म जयन्ती का अवसर,
एनएमसीसी लोकार्पण हो गया पुण्य भूमि पर।
ऋषियों की पावन परम्परा, को किया गया साकार।
बोलो ऋषि की जय जयकार-2।।
तपः पूत ऋषि दयानन्द के, अशोक आर्य नरनामी।
भवानीदास संग तापड़िया जी, आर्य नवनीत सहगामी।
नमन करे 'संजय' इस भू को, ले वैदिक व्यवहार।
बोलो ऋषि की जय जयकार-2।।

- संजय सत्यार्थी (आर्योपदेशक)
बिहार- 9006166168

सत्यार्थ मित्र बनें

न्यास के कार्यो को गति प्रदान करने के लिए 5100 रु. (पाँच हजार एक सौ) वार्षिक का सहयोग प्रदान करें।

आपका मात्र ५१०० रुपये वार्षिक का सहयोग न्यास के कार्य को अद्वितीय गति प्रदान कर सकता है।

हमारे अत्यन्त आत्मीय बन्धुजन!

इस अपील को मेरी व्यक्तिगत अपील कहिए अथवा न्यास की अपील समझिए। यह आप तक पहुँचे और आपकी आत्मीयता हमें प्राप्त हो, इसी नाते हम प्रथम बार अर्थ सहयोग का निवेदन कर रहे हैं।

आपको यह जानकारी होगी ही कि नवीन, आकर्षक प्रकल्पों का निर्माण कर न्यास सहस्रों लोगों तक वैदिक संस्कृति के मूल तत्त्वों को अग्रप्रसारित कर रहा है। सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर द्वारा आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा में वेद, वेद के प्रादुर्भाव, भारतीय ऋषियों के योगदान, योगिराज श्री कृष्ण और भगवान राम के पावन जीवन–चरित्र, मेवाड़ की माटी के गौरव महाराणा प्रताप, आर्यसमाज के रत्नों, भारत को स्वतन्त्रता दिलाने वाले क्रान्तिकारियों, सत्यार्थ प्रकाश चित्रावली एवं महर्षि दयानन्द के जीवन चरित्र के माध्यम से व संस्कार वीथिका के माध्यम से मानव निर्माण की पूरी योजना आगन्तुकों के सामने रखी जा रही है। इस क्रम में मानों महर्षिवर की संस्कार विधि मूर्तरूप में चित्रित हो गयी है।

वहीं उच्चतम गुणवत्ता के 3D थियेटर का निर्माण कर महापुरुषों के जीवन–चरित्र का दिग्दर्शन भी कराया जा रहा है। यहाँ यह अंकित करना आवश्यक है कि मुक्त हस्त से दिए हुए उदार अर्थ के सहयोग से भव्य संस्कार वीथिका परिसर व थियेटर का निर्माण माननीय सुरेश चन्द्र जी आर्य; अहमदाबाद और माननीय दीनदयाल जी गुप्त; कोलकाता के पवित्र सहयोग से हो पाया है एवं संस्कारों का निर्माण आर्यजनों के सामूहिक सहयोग से एकत्रित धन से हुआ है। परन्तु इनको गति देने के लिए, वर्ष में सारे प्रकल्प 365 दिन गतिशील रहें, इसके लिए आवश्यक है कि कुछ लोग आगे आएँ और प्रतिवर्ष अपना योगदान दें, इसीलिए आपसे यह निवेदन कर रहा हूँ। **मैं व्यक्तिगत रूप से अनुगृहीत हूँगा अगर आप मात्र 5100 सौ रुपये प्रतिवर्ष देने का संकल्प लेंगे।** न्यास का एकाउन्ट नम्बर भी नीचे अंकित है। न्यास को प्रदत्त दान आयकर अधिनियम की धारा 80G के अन्तर्गत कर मुक्त है।

हमें आशा ही नहीं विश्वास है कि आप हमारी प्रार्थना को स्वीकार कर 5100 रुपये वार्षिक का यह अर्थ सहयोग प्रदान करने की कृपा करेंगे। **निश्चित मानिये आपके सहयोग से जो ऊर्जा और गति हमें मिलेगी वह लाखों लोगों तक वैदिक संस्कृति के उदात्त मूल्यों को सम्प्रेषित करने में मील का पत्थर साबित होगी।**

निवेदक- अशोक आर्य, अध्यक्ष-न्यास

चैक श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, मेन ब्रांच, दिल्ली गेट, उदयपुर

बैंक एकाउन्ट का विवरण :

AC. No. : 310102010041518,
IFSC CODE- UBIN 0531014,
MICR CODE- 313026001

में जमा करा कृपया सूचित करें।

जिन महानुभावों ने हमारे एक आग्रह पर न्यास को सम्बल प्रदान करने हेतु 5100 रु. (इक्कावन सौ) प्रतिवर्ष देकर सत्यार्थ मित्र बनना स्वीकार किया उनके चित्र को यहाँ हृदय से धन्यवाद प्रेषित करते हुए दे रहे हैं। बाकी साथियों के चित्र अगले अंक में दिए जायेंगे।

श्रीमती शशि अग्रवाल
पानीपत

श्री परशुराम सुयल
उदयपुर

श्री गुरुदत्त भगवान दास शर्मा
गाँधीधाम; गुजरात

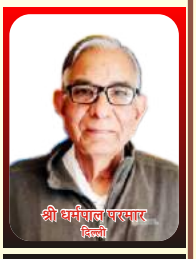

श्री धर्मपाल परमार
दिल्ली

श्री डी.पी. मिश्रा
कोटा

लेफ्टिनेन्ट कर्नल डी.एन. शर्मा
कोटा

श्रीमती सुमेधा आर्या
कोटा

श्री श्याम बाबू दिक्षित
उदयपुर

आत्म निवेदन

आखिर स्वप्न सम्पूर्ण हुआ

सपनों के बारे में बड़ी विचित्र स्थिति है। कुछ लोग कहते हैं कि सपने नहीं देखने चाहिए क्योंकि सपने कभी पूरे नहीं होते, तो कुछ लोग कहते हैं कि सपने देखेंगे तभी तो टारगेट फिक्स करेंगे। सपने देख कर उन्हें पूरा करने के लिए पूर्ण पुरुषार्थ कीजिए, सपने सच भी होंगे।

जो भी हो जब से नवलखा महल, उदयपुर जो कि सत्यार्थ प्रकाश की रचना स्थली होने के कारण अत्यन्त पवित्र और ऐतिहासिक स्थल है, आर्यों की आस्था का केन्द्र है, उससे जुड़ा तभी से मन में यह विचार था कि इसे किसी पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया जाना चाहिए। यह सत्य है कि उस समय तक कोई व्यापक चित्र समक्ष नहीं था कि क्या होना चाहिए पर कार्य तभी से प्रारम्भ हो गया। महर्षि दयानन्द जी महाराज की जीवन यात्रा की अर्थात् जन्म से लेकर के मृत्यु पर्यंत जहाँ-जहाँ भी ऋषि गए, भारत का नक्शा बना करके उसमें उन सभी स्थानों को हाईलाइट किया और महल के अन्दर एक दीवाल पर लगाया, दूसरी ओर १९९७ में महर्षि दयानन्द के जीवन चरित्र को लेकर के ऑयल पेंटिंग्स बनवाने प्रारम्भ किए, जिनमें महर्षि दयानन्द जी के जीवन

की प्रमुख-प्रमुख सभी घटनाएँ समेटने का प्रयास किया। ३ वर्ष के अनथक परिश्रम से तीन विभिन्न चित्रकारों के यहाँ निरन्तर जा-जाकर, उन्हें चित्र का मर्म समझाने का प्रयत्न करने के बाद, यह चित्रदीर्घा प्रकाश में आई और धीरे-धीरे आर्य जगत् में प्रसिद्ध होने लगी। पर्यटक भी आने लगे और बुक स्टॉल से आर्य साहित्य भी बिकने लगा। कुछ वर्ष तो ऐसे हुए कि वर्ष में २५ से ३०,००० पर्यटक भी यहाँ आए और लाखों रुपए का साहित्य यहाँ से क्रय करके ले गए। निरन्तर चिन्तन के पश्चात् इस विचार ने जन्म लिया कि पूरे विश्व में आर्य जगत् में एक भी ऐसा स्थान नहीं है कि उसकी सुन्दरता, आकर्षण के कारण लोग वहाँ अधिकाधिक संख्या में आएँ। लोगों का आना महत्त्वपूर्ण है। जब आएँगे ही नहीं तो हम अपनी बात कहेंगे कैसे? यहाँ यह लिखना आवश्यक है कि इस दिशा में प्रत्येक गतिविधि को न्यास के संस्थापक अध्यक्ष स्मृतिशेष पूज्य स्वामी तत्त्वबोध सरस्वती का आशीर्वाद रहा।

२००७ में जब हम शिकागो आर्य महासम्मेलन में गए तो डॉ. सुखदेव सोनी जी के सौजन्य से मुझे १५-२० मिनट के उद्बोधन का अवसर मिला। वहाँ आर्य जगत् के लगभग सभी प्रमुख जन उपस्थित थे। उस उद्बोधन में हमने अपने स्वप्न को उनके सामने रखने का प्रयास किया। प्रतिक्रिया अत्यन्त ही सकारात्मक थी। अमेरिका

आर्य समाज के प्रधान श्री वीरमुखी जी तो अपनी झोली फैला करके खड़े हो गए कि उदयपुर के प्रोजेक्ट के लिए इसमें पैसे डालिए। श्रीमती मधु वार्ष्णेय जी एवं श्री हरि वार्ष्णेय जी ने तभी ₹५००००० (पाँच लाख) की घोषणा कर दी। बात यह नहीं है कि उस समय कितने पैसे इकट्ठे हुए, बात उस संवेग की है जो इस पथ पर आगे बढ़ने के लिए पर्याप्त ऊर्जा दे रहा था। भारत लौटने के पश्चात् एक ही स्वप्न समक्ष था कि ऋषि की इस पवित्र कर्मस्थली को न केवल सुन्दर और आकर्षक बनाया जाए ताकि लोगों का आगमन तो हो तभी तो उसके पश्चात् प्रेरणा देने की, वैदिक संस्कृति का दिग्दर्शन कराने की, ऋषि दयानन्द जी के मन्तव्य और विचारों को पर्यटक तक पहुँचाने की यथेष्ट सामग्री जो यहाँ पर दिग्दर्शित हो, उसका उपयोग हो सकेगा। इस सारे समय पूज्य स्वामी तत्त्वबोध सरस्वती जी का स्मरण होता रहा कि अगर वे होते तो अर्थ जुटाने की चिन्ता मेरे सर न होती।

न्यास के तत्कालीन अध्यक्ष पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी के आशीर्वाद से इस दिशा में प्रयत्न हुए। कुछ ठोस कार्य भी हुआ। हल्दीघाटी जाने वाले रास्ते पर एक १२ बीघा जमीन क्रय की गयी, जिसका नाम दयानन्द धाम रखा गया। एक वृहद् परियोजना का खाका बना परन्तु अनेक कारणों से, पूज्य महाशय जी की तीव्र अभिलाषा होते हुए भी यह कार्य पूर्णता को प्राप्त नहीं हुआ। ईश्वर की इच्छा हुयी तो, पिता के पथ का ही अनुसरण करने वाले महाशय राजीव गुलाटी जी के द्वारा सम्पन्न हो यह भी सम्भव है।

अब पुनः नवलखा महल पर आते हैं।

जिन्होंने इस नवलखा महल को पूर्व में देखा होगा उन्हें ज्ञात है कि यह एक सामान्य सी इमारत दिखाई देती थी और उदयपुर के ही निवासी प्रातः सायं भ्रमण करने वाले, जो हजारों लोग इसके सामने से निकलते थे वे नजर भर करके इसको देखते भी नहीं थे। इसको ध्यान में रखते हुए सबसे पहला निश्चय यह हुआ कि इतना आकर्षण, सुन्दरता और स्वच्छता इस भवन में पैदा की जाए कि दर्शक बरबस खिंचा चला आये। कुछ बन्धु कह सकते हैं और उस दौरान में कहा भी, कि भवन में पैसा लगाना धन को व्यर्थ करना है। हम उनसे सहमत थे परन्तु तब तक, जब तक कि इस भवन को प्रेरक न बनाया जाए। अगर आप सौन्दर्य व आकर्षण उत्पन्न कर सकें जिससे सामान्य जन उत्सुक होकर आ सकें और फिर हम कुछ ऐसे प्रकल्प, कुछ ऐसे नवाचार स्थापित कर दें कि लोग वहाँ से वैदिक संस्कृति के मूल तत्व को अपने साथ ले जा सकें तो फिर इससे बड़ी कोई पाठशाला आर्य समाज की नहीं हो सकती। नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र ठीक इसी स्वप्न का मूर्त रूप है।

तो, अब तक स्पष्ट चित्र सामने उभर चुका था कि नवलखा महल में क्या करना है परन्तु अब समस्या यह थी जो कुछ करना है उसमें लाखों-करोड़ों रुपए लग सकते हैं वह धन कहाँ से आएगा? हम तो यहाँ उदयपुर में ही एक कोने में बैठकर के कार्य करते रहते हैं, अनेक कारणों से यात्राएँ नहीं करते और जब तक आप यात्रा करके विभिन्न लोगों के पास नहीं जाते तब तक न तो वे आपके विचारों को समझ सकते हैं न ही आपको सहयोग करने का कोई मानस बना सकते हैं, यह बात सत्य है। परन्तु हमने यह देखा कि अगर प्रभु की इच्छा है तो सारी स्थितियाँ अनुकूलता के साथ उत्पन्न हो जाती हैं। यही हुआ। यद्यपि हमने निश्चय किया था कि इस कार्य के लिए अपेक्षित धन जुटाने बाहर भी जाना पड़ा तो हम जायेंगे, परन्तु तब लॉकडाउन आड़े आ गया।

अब यहाँ मैं दो ऐसे महान् व्यक्तियों का जिक्र करना चाहूँगा जिन्होंने स्वप्न को पूरा करने के लिए जो कुछ किया जितना सहयोग किया और जितना आश्वासन दिया वह इस NMCC का आधार बन गया।

सर्वप्रथम समस्या यह थी कि जर्जर बिल्डिंग को स्थायित्व प्रदान की जाए। प्रभु की कृपा हुई स्मार्ट सिटी के अधिकारियों के मन में इस हेरिटेज बिल्डिंग को संजोने की भावना पैदा हुई और स्मार्ट सिटी के तत्कालीन

सीईओ श्री कमर चौधरी जी तथा महापौर श्री चन्द्रसिंह जी कोठारी के सहयोग से लगभग ४५००००० (पैतालीस लाख) रुपए से उन्होंने स्ट्रक्चरल स्थायित्व सुनिश्चित किया। बीच के चौक में जिन लोगों ने पहले देखा है खुली छत थी और गर्मी के दिनों में वहाँ फर्श तप जाता था यहाँ तक कि दर्शकों को भाग करके आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा तक जाना पड़ता था। वैसे भी स्थान काफी सीमित है इसलिए चौक में कुछ न कुछ प्रस्तुति आवश्यक थी। इसके लिए अनिवार्य था कि एक डोम के द्वारा चौक को ढक दिया जाए। उदयपुर के तत्कालीन विधायक और आज असम के महामहिम राज्यपाल श्रीमान् गुलाब चन्द जी कटारिया ने अपनी विधायक निधि से १०.३० (साढे दस) लाख रुपए की निधि दी जिससे डोम बन गया।

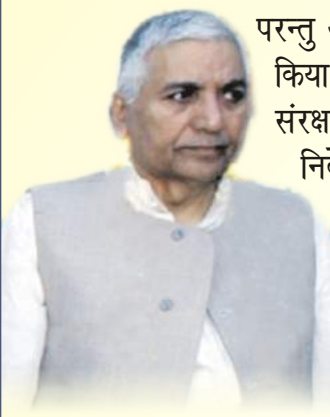

परन्तु अब इसे सजाना संवारना था। इसके लिए जिनका मैंने ऊपर जिक्र किया सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान, हमारे अग्रज, न्यास के संरक्षक माननीय सुरेश चन्द जी आर्य और डॉलर इण्डस्ट्रीज के निदेशक चेयरमैन आर्य समाज के ऐसे दानवीर जिनके सहयोग से अनेक संस्थाएँ पुष्पित और पल्लवित हो रही हैं, माननीय बाबू दीनदयाल जी गुप्त इन दोनों ने स्पष्ट कहा कि आप कार्य करिए धन की चिन्ता मत करिए। फिर क्या था हमारे पंख लग गए। २४ घण्टे बस एक ही धुन कि इस प्रोजेक्ट को पूरा करना है। सुन्दर डोम के साथ उस चौक को आच्छादित किया गया और न्यास के निश्चय के अनुसार इसके अन्तर्गत संस्कार वीथिका के रूप में १६ संस्कारों का जीवन्त प्रदर्शन हो।

विस्तार में न जाते हुए यह अवश्य कहना चाहूँगा यह कार्य चल ही रहा था कि लॉकडाउन लग गया। परन्तु प्रभु की इच्छा देखिए हमने यह निश्चय किया था कि एक-एक संस्कार के लिए हमें ₹३००००० (तीन लाख) की आवश्यकता पड़ेगी अगर १६ ऐसे दानदाता मिल जाएँ तो यह संस्कार वीथिका तैयार हो जाएगी और आश्चर्य इस निमित्त हमने हमारे जिन आत्मीयजनों को फोन किया, सभी ने सहर्ष स्वीकृति दे दी और लगभग १ वर्ष नवलखा महल में रहकर के ही श्री गौरमोहन पहाड़ी जी के नेतृत्व में बंगाल के कलाकारों ने यह संस्कार वीथिका तैयार की। दैनिक नियम था कि हम उनके बनाए हुए कार्य को देखते थे उसमें जो संशोधन की आवश्यकता होती वे संशोधन कराते थे। यह संस्कार वीथिका अब विभिन्न प्रान्तों का प्रतिनिधित्व करते हुए, वहीं के साज-सज्जा कपड़े और बैकग्राउण्ड के साथ अति मनमोहक स्वरूप में पर्यटकों को लुभा रही है, उन्हें प्रेरणा भी दे रही है।

इसी के साथ-साथ एक मिनी थियेटर बनाया गया जिसमें ३४ लोग ही एक साथ बैठ सकते हैं परन्तु यहाँ पर जो प्रोजेक्टर साउण्ड सिस्टम लगाया है वे सब उच्च क्वालिटी के हैं। दृश्य-आवाज दोनों ही उच्च दर्जे के हैं। आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा में भी विस्तार किया गया।

यहाँ आते-आते लगने लगा कि आगे का स्वागत कक्ष और बाहर का पूरा दृश्य अब शायद नहीं हो पाएँगे इसके लिए फिर आगे धन की आवश्यकता होगी। परन्तु तभी कनाडा के श्रीमान् हरि वार्ष्णेय और श्रीमती मधु वार्ष्णेय यहाँ पर आए (वही जिन्होंने शिकागो में सर्वप्रथम ५ लाख रुपये की घोषणा की थी और दिये भी।) और उन्होंने दिल खोलकर सहयोग किया। परिणामस्वरूप मधु-हरि वार्ष्णेय प्रेरणा कक्ष हमारे समक्ष है। इसका नाम स्वागत कक्ष न रखके प्रेरणा कक्ष क्यों रखा? इसका कारण

है कि इसमें एक वॉल ऑफ फेम अथवा राष्ट्रोन्नायक वीथिका है जिस पर ऐसे ६० से अधिक महापुरुषों के चित्र, जिन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में भारत को अपना योगदान देकर के गौरव प्रदान किया है (उनके तीन विधाओं में) प्रस्तुतीकरण है तो दूसरी ओर पंचमहायज्ञ वीथिका है जो जिन नित्य कर्मों को अवश्य करना चाहिए उनके महत्त्व के बारे में दर्शकों को बताने में समर्थ है। एक तरह से हम कहें तो महर्षि दयानन्द जी महाराज की पंचमहायज्ञ विधि, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, सत्यार्थ प्रकाश और संस्कार विधि इन चार महत्वपूर्ण ग्रन्थों को यहाँ पर दृश्यमान कर दिया गया है। पुस्तक विक्रय केन्द्र के पुराने स्वरूप को हटाकर बहुत सुन्दर नयनाभिराम बना दिया गया है। बाहर का दृश्य आकर्षक बनाने के लिए जोधपुर के पत्थर पर कार्विंग बहुत सुन्दर कराई गई है। जोधपुर का पत्थर श्रीमान् किशन गहलोत और जय सिंह जी गहलोत के सहयोग से प्राप्त हुआ। यहाँ पर पहली बार यह प्रयास किया है कि वेद मंत्रों के अर्थ को भी दृश्यमान कर चित्रों के माध्यम से समझाया जाए। ऐसा ८ मंत्रों को ले करके हमने किया है। अब बाहर का दृश्य ऐसा हो गया है जैसे कि हमने सबसे पहले कहा था कि यह सब कुछ ऐसा होना चाहिए कि सामने से निकलने वाला दर्शक बरबस रुक जाए। आज ऐसा ही हो रहा है। लोग जो जल्दी में होते हैं बाहर से फोटो ही लेकर चले जाते हैं अन्दर आते हैं तो लगभग आधे घण्टे से १ घण्टे का समय लगा कर वैदिक संस्कृति का साक्षात् करते हैं। इस संक्षिप्त निवेदन में हम यही निवेदन करना चाहते हैं कि हमने स्वप्न देखा था जो हमारे साथियों के साथ, न्यास की टीम के साथ, उदयपुर के आर्यों के साथ ही नहीं वरन् सभी आर्यों के साथ मिलकर के ईश्वर की कृपा से यह पूर्ण हुआ और अब हमें आशा ही नहीं विश्वास है (वह इस आधार पर कि निर्माण के दौरान ही हजारों दर्शक यहाँ आते रहे, गद्गद् होते रहे) कि यह सब और विशाल आयाम प्राप्त करेगा। NMCC का उद्घाटन २६ फरवरी २०२३ को गुजरात के राज्यपाल माननीय महामहिम आचार्य देवव्रत जी के कर कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ।

आज जब हम यह आत्म निवेदन लिख रहे हैं ३ मार्च है। इन कुछ दिनों में कम से कम १० बार ऐसे फोन आ गए हैं कि हम उदयपुर आकर के NMCC के स्वरूप को देखने के लिए बेचैन हैं।

हमारी तरफ से विश्व भर के आर्यों को आमंत्रण है, उनका स्वागत है कि वह महर्षि जी की कर्मस्थली पर आएँ और NMCC के माध्यम से विभिन्न नवाचारों को समेटे हुए जो कुछ निर्मित किया है उसे अपना आशीर्वाद प्रदान करें। सधन्यवाद।

- अशोक आर्य
सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

विश्व भर से आने वाले पर्यटकों के नवलखा महल, उदयपुर के बारे में विचार

Visiting Navalkha Mahal Cultural Centre (NMCC) has been an enriching experience! Right from the entrance which depicts the four Rishis who were instrumental in revealing the 4 Vedas, one is introduced to the aura of the rich cultural heritage that lies within. Inside not only does one get to see the pictorial representation of the life of our revered Swami Dayanand Saraswati, but also many more gems from our history. The representation of the Sixteen Sanskars through the 'Sanskar Vithika' is a unique feature with the QR code which enriches our knowledge. The guide explains the details in a patient manner to enlighten the tourist and the curious.

Undoubtedly, this has enhanced the beauty and utility of Gulab Bagh. A must visit place for all who travel to Udaipur.

Congratulations to Shri Ashok Arya for the vision, the dedication, to all who contributed to bringing out to life and to the whole management of NMCC for their devotion in maintaining this so well!

- Sajjan singh ji Kothari

होलिकोत्सव

डॉ. कविता शर्मा

पर्वों का हमारे जीवन में क्या महत्व है, इस बात को प्रत्येक व्यक्ति जानता है जो भारतीय सभ्यता और संस्कृति से जुड़ा हुआ है। परन्तु पाश्चात्य सभ्यता के प्रभाव से हमारे सामाजिक, धार्मिक एवं वैयक्तिक जीवन पर तो प्रभाव पड़ा ही है, वहीं पर्वों (त्यौहार) को मनाने की परम्परा भी प्रभावित हुई है। और वर्तमान में उत्सवों को बिगड़े रुप में मनाने से फायदे की जगह नुकसान ही हुआ है। हमारे हर त्यौहार मनाने के पीछे कोई न कोई वैज्ञानिक और बौद्धिक कारण है। इन कारणों को दृष्टिगत रखते हुए ही हमारे ऋषियों-मुनियों ने अनेकों त्योहार भारतवर्ष में मनाने के निर्देश दिए थे। उनमें से चार प्रमुख त्योहार हैं यथा- रक्षाबन्धन, दशहरा, दीपावली, होली।

वर्तमान में अगर हम देखें तो त्योहार मनाने का सबसे ज्यादा रुप बिगड़ा है तो वो है होली का। कुछ लोगों ने तो होली को हुड़दंग का कार्य कह दिया है। ''होली को मनाने के पीछे एक दन्तकथा यह प्रचलित है कि हिरण्यकश्यपु नाम का दम्भी और अहंकारी राजा था। वह नास्तिक था और उसकी मान्यता थी कि वह ईश्वर से बड़ा है और ईश्वर नाम की कोई सत्ता नहीं है। ईश्वर की उपासना करने की, किसी भी नर-नारी को कोई आवश्यकता नहीं है। कोई पूजा करना चाहता है उसकी अर्थात् हिरण्यकश्यपु की ही पूजा करे। इस घोर अत्याचारी शासक के पुत्र का नाम था प्रह्लाद। हिरण्यकश्यपु ने अपने परमेश्वर प्रेमी पुत्र प्रह्लाद के सजीव दाह के लिए अपनी मायाविनी बहन होलिका द्वारा चिता रचवाई थी। होलिका को यह वरदान प्राप्त था कि अग्नि उसे जला नहीं सकती। अतः स्वयं को तो वह अग्नि से बचा लेगी किन्तु प्रह्लाद वहीं अग्नि में जलकर भस्म हो जायेगा। किन्तु परमात्मा की असीम भक्तवत्सलता के कारण सत्याग्रही प्रह्लाद का तो बाल भी बाँका न हुआ और राक्षसी होलिका ही उस चिता में भस्मसात् हो गई। उसी दिन से होलिका राक्षसी के दाह और भक्त प्रह्लाद के सुरक्षित रहने के उपलक्ष्य में होलिकोत्सव प्रचलित हुआ।''

इस पौराणिक दन्त कथा से भी हम सत्य-दृढ़ता अथवा सत्याग्रह की शिक्षा ले सकते हैं। संकटों का सागर उमड़े, आपत्तियों की आँधी चले, चाहे लोकनिन्दा हो, परन्तु एक सत्यव्रती का कर्तव्य है कि वह अपने निश्चित पथ से कभी विचलित न हो। यदि पिता अथवा अन्य गुरुजन भी सत्यपथ (सही रास्ते) से हटाकर कुमार्ग (गलत रास्ते) की ओर ले जाएँ तो उनकी बात भी नहीं माननी चाहिए। दूसरा यह कि होलिका जल गई और भक्त प्रह्लाद को 'नृसिंह'

अवतार ने बचा लिया। तभी से 'होलिका' का दहन पापाचारिणी के रुप में किया जाता है। इसके पीछे यह मान्यता है कि हम अपने दुर्गुणों, दुर्व्यसनों और क्लेशों की आहुति डालकर उन्हें अग्नि को समर्पित कर भस्मीभूत कर डालते हैं। लेकिन प्रश्न यह भी है कि ''होलिका'' को अग्नि से न जलने का वरदान प्राप्त था तो वह जल क्यों जाती है? और दूसरा प्रश्न कि- हिरण्यकश्यपु तानाशाह था वह स्वयं उसकी हत्या करा सकता था फिर उसे छल कपट से मारने की क्या आवश्यकता थी? यह तथ्य वैज्ञानिक प्रतीत नहीं होता है तो वैज्ञानिकता क्या है?

हिन्दुओं के पंचांग के अनुसार यह पर्व संवत् वर्ष में अन्तिम पर्व है। यह पर्व फाल्गुन सुदि पूर्णिमा को मनाया जाता है। होली के बाद ही हिन्दू नववर्ष का आगमन होता है और सम्पूर्ण प्रकृति में परिवर्तन प्रतीत होता है। पेड़ों पर नई-नई पत्तियाँ आ जाती हैं, आम आदि पौधों पर बोर आ जाते हैं फसल हल्का सा पीलापन लेकर लहलहाने लगती है, पशु-पक्षी अपना रंग बदलने लगते हैं, गाय आदि पशुओं के रोम में परिवर्तन होता है, तथा स्वयं मनुष्य की चमड़ी भी जाड़े (सर्दी) की पिटी हुई यह मौसम आते ही अपना स्वरुप बदलती है। कहने का तात्पर्य यह है कि प्रकृति अपना स्वरुप बदलकर नव वधू सी लगने लगती है और किसान अपनी आषाढ़ी फसल गेंहूँ, जौ, चना, मटर आदि की अधपकी फसल को भूनकर खाता हुआ खुशी का अनुभव करते हुए उत्सव मनाते थे, और इस अधपके अन्न को भूनकर खाने को ही 'होला' कहते हैं। कालान्तर में यही शब्द होली के रुप में परिवर्तित हो गया होगा।

जैसा कि बताया है कि- संस्कृत में अग्नि में भूने हुए अर्द्ध पक्व अन्न को ''होलक'' कहते हैं।

''तृणाग्नि भृष्टार्द्धपक्वं शमीधान्यं होलकः।

होला इति हिन्दी भाषा'' (शब्दकोष द्रुमकोशः) अर्थात् तिनकों की अग्नि में भूने हुए अधपके शमीधान्य फली वाले अन्न को 'होलक' कहते हैं। जिसे हिन्दी में होला कहते हैं।

इसी प्रकार 'भाव प्रकाश' में इस प्रकार कहा है कि-

अर्द्धपक्वंशमी धान्ये स्तृणा भृष्टैश्च होलकः।
होल कोऽल्पानिलो, मेदकाल दोषश्रमा यहः।।
भवेदभो होलको यस्य दत्तदगुणो भवेतः।

अर्थात् तिनकों की अग्नि में भूने हुए अधपके अन्न को होलक कहा जाता है। होला स्वल्प वात है। यह मेद, कफ और थकान के दोषों का शमन करता है, अर्थात् उन्हें समाप्त करता है। जिस अन्न का होला होता है उसमें उसी अन्न का गुण होता है। वैदिक विद्वानों द्वारा यह जो सामाजिक व्यवस्था उच्च व आदर्श थी, जिसमें कृषक वर्ग अग्नि में होला करके खाता था, यह आयुर्वेद की देन थी जिससे हमारा कृषक वर्ग स्वस्थ रहता था। आज भी हम देखते हैं कि गाँव के पुराने वृद्ध शहरी वृद्धों की तुलना में अधिक स्वस्थ व कार्यशक्ति वाले होते हैं।

इस प्रकार 'होलक' का यह स्वास्थ्यवर्धक व सुहावना मौसम ही 'होलिका' का जनक है।

हमारी प्राचीन वैदिक परम्परा रही है कि नवीन वस्तुओं को देवों को समर्पित किये बिना अपने

उपयोग में नहीं लाया जाता है। जिस प्रकार मानव देवों में ब्राह्मण सर्वश्रेष्ठ है, उसी प्रकार भौतिक देवों में अग्नि सर्वप्रधान है। और देवयज्ञ का प्रधान साधन अग्नि ही है, और अग्नि को 'देवदूत' कहा जाता है। क्योंकि अग्नि ही सब देवों को होमे हुए द्रव्य पहुँचाता है। इसलिए नवागत (नये) अन्न को सर्वप्रथम अग्नि को अर्पण किया जाता है और उसके बाद विद्वानों को भेंट करके अपने उपयोग में लाये जाते थे।

वर्त्तमान में भी आपने कई जगह गाँवों में देखा होगा

कि किसान वर्ग अपना-अपना अन्न मंदिर या अन्य किसी जगह एकत्रित करते हैं और सब लोगों को वितरण करते हैं। इसलिए आज भी जनसाधारण में यह प्रथा प्रचलित है कि जब तक नवीन अन्नों या फलों को जब तक पूजा के रुप में प्रयोग नही लाया जाता है तब तक उसको लोक भाषा में ''अछूत'' कहा जाता है। इसी आधार पर प्राचीन काल में आषाढ़ी की नवीन फसल आने पर नये अन्न को होमने के लिए इस अवसर पर नवसस्येष्टि, होलकेष्टि अथवा होलकोत्सव होता था। जिसको आज हम होलिका उत्सव कहते हैं। परन्तु आज उसका रुप बिगड़ गया है- प्राचीन भारतवर्ष में 'होलिका उत्सव' मनाने की बहुत ही उत्कृष्ट परम्परा थी। उस काल में ऋषि लोग इस नवान्वेष्टि पावनपर्व पर सर्वजन कल्याणार्थ आहुतियाँ अर्पित करते थे इन आहुतियों में आयुर्वेदिक औषधियों अर्जुनछाल, गूगल, आंवला, आम, गिलोय, बेलपत्र, नीम के पत्ते, तुलसी, कपूर, मेवे आदि का उपयोग करते थे। जिससे शारीरिक लाभ भी प्राप्त होता था लोग बीमारियों से मुक्त थे।

इस पर्व पर जो यज्ञ किया जाता था उसमें हमारे पूर्वज लोग, ऋषि-मुनि, लोगों के गलत कार्यों का पश्चाताप भी कराया करते थे। जिससे गलत कार्यों की नववर्ष में पुनरावृत्ति न हो। इसी भाव के साथ यज्ञ में आहुति दी जाती थी। हिन्दू समाज के विभाजित और विछिन्न घटकों में वे चाहते थे कि इस प्रकार के सामूहिक आयोजनों से परस्पर सामाजिक प्रेम भावना व सहयोग को बढ़ावा मिले। परन्तु इसी ''विशाल यज्ञ'' ने भारतीय पतनकाल में धीरे-धीरे गावों व नगरों में होलिका दहन का रुप ले लिया। लेकिन अब तक भी ''होलिका दहन'' के समय ब्राह्मण कुछ न कुछ मंत्रों का उच्चारण अवश्य करते थे। यह परम्परा अच्छी रही क्योंकि वैदिक मंत्रों के उच्चारण से वातावरण शुद्धि होती थी और एक गाँव/शहर में एक ही ''होलिका दहन'' होने से समस्त जन सामूहिक रुप से आयोजन में भाग लेते व इससे आपस में सौहार्द्र की भावना रहती थी। लेकिन कालान्तर में यह प्रक्रिया और भी क्षीण होती गई और वर्त्तमान में हम देखते हैं कि सामाजिक विघटन के कारण गली-मुहल्लों में अलग-अलग होली जलने लगी हैं। और देखते हैं कि इसका दूषित रुप ईर्ष्या और द्वेष की ओर बढ़ रहा है। प्रतिशोध की भावना होली पर पराकाष्ठा तक पहुँच जाती है। और कुछ लोग होली मनाने में गाली-गलौच, शराब पीना, जुआ आदि निन्दनीय कृत्य करने लगे हैं।

हमारे ऋषि-मुनियों की प्राचीन काल में होली मनाने की जो उत्कृष्ट परम्परा थी, वह वर्त्तमान तक आते-आते इतनी विदूषित हो गई है कि वर्त्तमान पीढ़ी ''होलिका'' का वास्तविक स्वरुप पहचान नहीं पा रही है। अतः हमारा आज यह कर्तव्य है कि नई पीढ़ी को त्योहारों व उत्सवों के वास्तविक स्वरुप का ज्ञान करावें। इस हेतु परिवार के सभी लोग वृद्ध, बच्चे, युवा सब मिल बैठकर हवन (यज्ञ) का आयोजन करें अपने परिवार की दुष्प्रवृत्तियों को अग्नि को समर्पित कर दें। प्राचीन काल में लोग इस पर्व पर पुष्पों के इत्र को एक दूसरे पर छिड़ककर जीवन की सुगन्ध को बढ़ाया करते थे।

लेकिन होलिका की सम्पूर्ण प्राचीन परम्परा को यहाँ लिखना सम्भव नहीं है इसलिए वास्तविक वैदिक ग्रन्थों का अध्ययन करें। आप सभी से इसी आग्रह व विश्वास के साथ कि आपसी द्वेष व लड़ाई-झगड़े भुलाकर व दुष्प्रवृत्तियों को त्यागकर पवित्र भाव से होली मनाएँ।

- प्रधानाचार्या
महर्षि दयानन्द उच्च माध्यमिक विद्यालय, फतेहनगर

नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र (NMCC)

भव्य लोकार्पण समारोह

चित्रमय झलकियाँ

महामहिम आचार्य देवव्रत
राज्यपाल; गुजरात

मधु-हरि वार्ष्णेय प्रेरणा कक्ष का अवलोकन करते आचार्य देवव्रत जी

संस्कार वीथिका का लोकार्पण करते आचार्य देवव्रत जी

भजनोपदेश करते श्री केशवदेव जी शर्मा

श्रीमती दर्शनादेवी जी का स्वागत करती श्रीमती आभा आर्या

कार्यक्रमान्तर्गत न्यास की भव्य यज्ञशाला में प्रातःकालीन यज्ञ

स्वामी सदानन्द जी गणमान्य अतिथियों के साथ ध्वजारोहण करते हुए

गार्ड ऑफ आनर लेते गुजरात के राज्यपाल

मंच पर विराजमान गणमान्य अतिथिगण

समारोह में उपस्थित दर्शकवृन्द

समारोह में उपस्थित संन्यासीगण

ठाकुर विक्रम सिंह का स्वागत करते हुए

मंच पर संन्यासीवृन्द

आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय उद्‌बोधन देते हुए

श्री प्रकाश आर्य का स्वागत करते भँवर लाल आर्य

पुस्तक मानव तु मानव बन द्वारा पूर्व राज्यपाल बाबू गंगाप्रसाद जी

समारोह में उपस्थित दर्शकवृन्द

स्वागत गान प्रस्तुत करती वैदिक कन्या शिवालय; आबू रोड़ की बालिकाएँ

समारोह में उपस्थित दर्शकवृन्द

श्री दीनदयाल जी गुप्त का स्वागत करते न्यास मंत्री

समारोह में उपस्थित श्री दिनेश कोठारी (पूर्व RAS)

आयावर्त चित्रदीर्घा का अवलोकन करते आचार्य देवव्रत जी

भजनोपदेशक कैलाश कर्मठ का स्वागत करते इन्द्रप्रकाश यादव

पूर्व लोकायुक्त श्री सज्जन सिंह जी कोठारी का स्वागत करते मोतीलाल जी आर्य

समारोह में उपस्थित डॉ. वीरोत्तम तोमर

आर्य जगत के भामाशाह ठाकुर विक्रम सिंह जी का स्वागत करते मोतीलाल जी आर्य

आचार्य अग्निव्रत जी नैष्ठिक उद्बोधन देते हुए

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य जी का स्वागत करते डॉ. अमृतलाल जी सापड़िया

समारोह में आर्य आर्यों का अभिनन्दन स्वीकार करते गुजरात के राज्यपाल

समारोह अध्यक्ष श्री एस.के.आर्य जी
चेयरमैन, जेबीएम ग्रुप; गुरुग्राम

मधु-हरि कक्ष में उपस्थित गणमान्य अतिथिगण

मंच पर विद्यमान आर्य विद्वान्, संन्यासी एवं नेतागण

डॉ. सत्यपाल सिंह जी, सांसद बागपत उद्बोधन देते हुए

श्री सुरेश चन्द्र जी आर्य, संरक्षक-न्यास उद्बोधन देते हुए

समारोह में उपस्थित कृष्णावत बन्धु

समारोह में उपस्थित भजनोपदेशक श्री केशवदेव जी शर्मा

समारोह में उपस्थित श्री सुधानन्द जी सरस्वती

आचार्य चन्द्रशेखर शर्मा, ग्वालियर उद्बोधन देते हुए

अतिथि का स्वागत करते श्री इन्द्रप्रकाश यादव

श्री सज्जन सिंह जी कोठारी उद्बोधन देते हुए

समारोह में उपस्थित आचार्य बलवीर जी

समारोह में एक सत्र का संचालन करते श्री भूपेन्द्र शर्मा

श्री गंगाप्रसाद जी
पूर्व राज्यपाल, सिक्किम

समारोह में श्री धर्मनारायण जोशी, विधायक मावली

समारोह में ठाकुर विक्रम सिंह जी

समारोह में उपस्थित श्री आनन्द कुमार जी आर्य

स्व. घनश्याम सिंह जी कृष्णावत अतिथिशाला का लोकार्पण करते अतिथिगण

समारोह में उपस्थित पूर्व आईजी टी.सी. डामोर जी

समारोह में उपस्थित आचार्य वेदप्रिय जी शास्त्री

समारोह में उपस्थित राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री किशनलाल गहलोत

समारोह में उपस्थित डॉ. वेदप्रताप वैदिक

आचार्य चन्द्रशेखर शर्मा का स्वागत करते न्यास अध्यक्ष अशोक आर्य

श्री फूलसिंह मीणा, विधायक उदयपुर ग्रामीण उद्बोधन देते हुए

समारोह में उपस्थित न्यासी श्री विजय सिंह भाटी

समारोह में उपस्थित डॉ. रमेश चन्द्र गुप्ता, न्यूजर्सी

समारोह में उपस्थित श्री विनीत आर्य, अहमदाबाद

मंचस्थ विशिष्ट अतिथि श्री चन्द्र सिंह कोठारी एवं अतिथिगण

समारोह में उपस्थित अतिथि

समारोह में उपस्थित श्री जोगिन्दर खट्टर, मंत्री-दयानन्द सेवाश्रम संघ

श्री धर्मनारायण जोशी का स्वागत करते न्यास अध्यक्ष अशोक आर्य

समारोह में उपस्थित आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक

समारोह में उपस्थित श्री राजवीर जी

समारोह में उपस्थित स्वामी आर्यशानन्द सरस्वती

मंचस्थ विशिष्ट अतिथि आचार्य रघुवीर वेदालंकार एवं अतिथिगण

समारोह में उपस्थित डॉ. रामविलास शर्मा, दक्षिण अफ्रिका

अशोक आर्य का सम्मान करते अतिथिगण

समारोह में उपस्थित साध्वी पुष्पा शास्त्री जी

समारोह में उपस्थित साध्वी उत्तमायति जी

समारोह में उपस्थित माननीय संन्यासी वृन्द

श्री सत्यानन्द जी आर्य, प्रधान; परोपकारिणी सभा उद्बोधन देते हुए

सीकर सांसद स्वामी सुमेधानन्द जी का सम्मान करते डॉ. अमृतलाल तापड़िया

श्री जोगिन्दर खट्टर, मंत्री-दयानन्द सेवाश्रम संघ उद्बोधन देते हुए

डॉ. नरेश धीमान्, अजमेर उद्बोधन देते हुए

न्यास अध्यक्ष श्री अशोक जी आर्य का सम्मान करते
सर्वश्री आचार्य देवव्रत जी, एस.के. आर्य जी, सुरेश चन्द्र जी आर्य, प्रकाश जी आर्य

श्री रुपकिशोर शास्त्री जी का सम्मान करते आचार्य मोक्षराज

आचार्य जीववर्धन शास्त्री, मंत्री-राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा उद्बोधन देते हुए

डॉ. रामविलास शर्मा, दक्षिण अफ्रिका उद्बोधन देते हुए

स्मृतिशेष सत्यार्थदूत सरोज वर्मा जी की पुस्तिका मृत्योर्माऽमृतंगमय का विमोचन करते अतिथिगण

श्री विनय आर्य, महामंत्री-दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा उद्बोधन देते हुए

श्री एम.एल. गोयल, जयपुर उद्बोधन देते हुए

आचार्या धारण जी, आचार्य कन्या गुरुकुल; शिवगंज उद्बोधन देते हुए

मंचस्थ अतिथि का दुपट्टे से सम्मान करती श्रीमती मनोरमा गुप्ता

भव्य महोत्सव में ऋषि लंगर का आनन्द लेते अतिथिगण

श्री ओमप्रकाश वर्मा, जयपुर का स्वागत करते सत्यप्रकाश शर्मा

श्री फूल सिंह मीणा, विधायक का स्वागत करते विनोद राठौड़

भजनोपदेशक श्री अमर सिंह जी का स्वागत करते विनोद राठौड़

न्यास समाचार

नवलखा महल उदयपुर के सांस्कृतिक केन्द्र का भव्य लोकार्पण एवं विशाल आर्य महासम्मेलन सम्पन्न

महर्षि दयानन्द की २००वीं जयन्ती वर्ष पर देश के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने १२ फरवरी को विश्वव्यापी कार्यक्रमों का शुभारम्भ दिल्ली से किया। इस शृंखला में देशभर का प्रथम भव्य कार्यक्रम उदयपुर राजस्थान स्थित नवलखा महल में सांस्कृतिक केन्द्र के लोकार्पण एवं विशाल आर्य महासम्मेलन द्वारा दिनांक २६ एवं २७ फरवरी २०२३ को हुआ। सांस्कृतिक केन्द्र का लोकार्पण गुजरात के माननीय राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी द्वारा किया गया। इस अवसर पर उन्होंने तीन खण्डों में निर्मित भव्य दृश्यमान वीथिकाओं को जनता को समर्पित किया।

आचार्य देवव्रत ने विशाल आर्य जन सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि महर्षि ने वैदिक संस्कृति के पुनर्जागरण में क्रान्तिकारी प्रयास किये और इन प्रयासों के प्रसारण में विशेषकर नवीन पीढ़ी को आकर्षित करने में श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर देशभर में अग्रणी संस्था है। संस्कार वीथिका, मिनी थियेटर एवं आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा जैसे नव प्रकल्पों के द्वारा पर्यटकों के केन्द्र उदयपुर में सभी आयु वर्ग के व्यक्तियों को आकर्षित कर उन्हें वैदिक संस्कृति एवं संस्कारों से परिचित करवाया जा रहा है।

लोकार्पण समारोह के प्रथम सत्र में कार्यक्रम की अध्यक्षता जेबीएम ग्रुप के चेयरमैन श्री एस.के. आर्य ने की, स्वागत भाषण श्री सुरेश चन्द्र आर्य-प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में विशिष्ट उपस्थिति पूर्व लोकायुक्त जस्टिस श्री सज्जन सिंह कोठारी एवं दानवीर डॉलर ग्रुप के अध्यक्ष श्री दीनदयाल गुप्त की रही। समारोह में अनेक गणमान्य संन्यासी, आर्य विद्वान्, उपदेशक एवं देश के कोने-कोने से पधारे आर्यों का विशाल समूह की उपस्थित थी। मुख्य अतिथि के लिए स्वागत गीत वैदिक विद्यालय, आबूरोड़ की छात्राओं ने प्रस्तुत किया। सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री कैलाश कर्मठ जी के द्वारा भजन हुए।

प्रातःकाल न्यास की सुन्दर यज्ञशाला में प्राकृतिक वातावरण में यज्ञ का आयोजन हुआ। जिसमें यज्ञ ब्रह्मा आचार्य श्री वेदप्रिय एवं संयोजक इन्द्र प्रकाश यादव थे। मन्त्र पाठ आर्य कन्या गुरुकुल; शिवगंज से आचार्या सूर्या जी के साथ पधारी ब्रह्मचारिणियों ने किया। मुख्य यजमान श्री दीनदयाल गुप्त, श्री सज्जन सिंह कोठारी, श्री कुलभूषण एवं श्री वासुदेव सपत्निक बने।

इस अवसर पर नवलखा परिसर में यज्ञ के पश्चात् ध्वजारोहण एवं दीप प्रज्ज्वलन माननीय राज्यपाल देवव्रत जी ने किया। न्यास की योजनाओं को सम्बल प्रदान करने हेतु गुजरात के राज्यपाल महोदय ने पाँच लाख रुपये के सहयोग की घोषणा भी की। संचालन श्री भूपेन्द्र शर्मा और श्री अशोक आर्य के द्वारा किया गया।

प्रथम दिवस के सायं कालीन सत्र में आर्य प्रतिनिधि सभा; राजस्थान के कर्मठ मंत्री श्री जीववर्धन शास्त्री ने सभा का संचालन किया। इस अवसर पर आर्य जगत् के अनेक गणमान्य विद्वान् संन्यासी मंचासीन थे। श्री विनय आर्य महामंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा; दिल्ली ने भी अपने विचार प्रकट किये और आह्वान किया कि ऋषि की २००वीं जयन्ती वर्ष में प्रत्येक आर्य अन्य २०० लोगों को आर्य विचार धारा से जोड़ें। ४ पुस्तकों का सेट दिल्ली से उपलब्ध कराया जायेगा, उसके प्रचार में सहयोगी बनें। सायंकालीन सभा में आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री किशनलाल गहलोत, कोषाध्यक्ष श्री जयसिंह गहलोत, वेद प्रचारक डॉ. मोक्षराज, अशोक शर्मा, सत्यवीर भरतपुर आदि पदाधिकारी उपस्थित रहें। प्रधान किशनलाल गहलोत ने कहा कि ऋषि के कार्यों को संगठन की मजबूती से बढ़ाया जा सकता है।

जीववर्धन शास्त्री ने आर्य जनों को आर्य संस्थाओं को खुलकर दान देने का आह्वान भी किया ताकि प्रचार कार्य निरन्तर होता रहे। नवलखा महल से चल रही सत्यार्थ मित्र एवं सत्यार्थ सौरभ जैसी योजनाओं में सहयोगी बनें। इस अवसर पर सांसद स्वामी सुमेधानंद जी ने स्मृतिशेष सरोज वर्मा द्वारा लिखित पुस्तक 'मृत्योर्माऽमृतं गमय' का विमोचन किया। श्री ओमप्रकाश वर्मा ने पुस्तक प्रकाशन में सहयोगी श्री नवनीत आर्य, ठा. विक्रम सिंह एवं वेदप्रिय शास्त्री आदि आर्यों का माला एवं शॉल से अभिनन्दन किया। पुस्तक विमोचन के अवसर पर गुरुकुल कांगड़ी के कुलपति डॉ. रूप किशोर, सत्यार्थ प्रकाश न्यास के अध्यक्ष अशोक आर्य, एमएल गोयल, अवनीश मैत्रिः जयपुर आदि उपस्थित थें। दो हजार पुस्तक न्यास को प्रचार-प्रसार हेतु भेंट भी की गईं।

द्वितीय दिवस २७ फरवरी को मुख्य अतिथि सिक्किम के पूर्व राज्यपाल माननीय बाबू श्री गंगा प्रसाद जी रहे। उन्होंने अपने उद्बोधन में कहा कि यह सांस्कृतिक केन्द्र सही अर्थों में देश की सेवा और महर्षि के विचारों का प्रसार कर रहा है। इन अद्भुत एवं नवाचारों से पूरित प्रकल्पों को जनता के सम्मुख रखने वाले अशोक आर्य हार्दिक धन्यवाद के पात्र हैं।

दिन का शुभारम्भ यज्ञ से हुआ जिसमें वैदिक विद्वान् श्री रघुवीर वेदालंकार ने आशीर्वचन कहें। द्वितीय दिवस के समारोह में उदयपुर नगर निगम के पूर्व महापौर चन्द्रसिंह कोठारी थे। कन्या गुरुकुल शिवगंज की आचार्या सूर्या देवी चतुर्वेदा ने महर्षि द्वारा नारी उत्थान के कार्यों का उल्लेख किया। साध्वी उत्तमा यति, पुष्पा शास्त्री, मावली के विधायक धर्म नारायण जोशी, विधायक फूलचन्द मीणा आदि सम्मानित लोगों ने मंच पर अपने विचार रखे।

इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेश चन्द्र आर्य ने श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के अध्यक्ष अशोक आर्य का शॉल, माला से एवं अभिनन्दन पत्र प्रदान कर उल्लेखनीय नवाचारों को साकार करने हेतु विशिष्ट सम्मान किया। इस विशाल समारोह के संयोजक एवं न्यास के संयुक्त मंत्री डॉ. अमृतलाल तापड़िया ने बताया कि दो दिवसीय इस भव्य कार्यक्रम में देश-विदेश के लगभग पाँच हजार अतिथियों के भोजन एवं आवास की उत्तम व्यवस्था न्यास की ओर से की गई। समारोह आयोजन में नवलखा महल आर्यों की पूरी टीम मंत्री श्री भवानीदास आर्य के नेतृत्व में पूर्ण समर्पण से व्यवस्थाओं में लगी रही जिसमे विनोद राठौर, जिग्नेश शर्मा, कृष्ण कुमार सोनी, राजकुमार-सरला गुप्ता, अवनीश मैत्रिः, इन्द्रप्रकाश यादव, ऋचा पीयूष, मित्तल बन्धु एवं भूपेन्द्र शर्मा सहित अनेक समर्पित आर्य कार्यकर्त्ता थे।

गंगा अशुद्ध हो गई है

गंगा नदी जहाँ से आरम्भ होती है वहाँ शुद्ध रूप में है। वह स्थान गंगोत्री है। कहते हैं कि वह छोटा सा स्थान है जिसे छलांग लगाकर पार किया जा सकता है। ज्यों-ज्यों वह आगे बढ़ती है, वह फैलती व गहरी होती है क्योंकि कई ग्रामों, कई नालों व कई नदियों का जल इसमें आकर मिल जाता है। हरिद्वार तक पहुँचकर यह विशाल रूप धारण कर लेती है। इसके आगे कई नगरों, ग्रामों व कस्बों का प्रदूषित जल समाहित होता है। इन सबके जल में मल-मूत्र, पशुओं का गोबर, कारखानों का कचरा, मृतकों की अस्थियाँ, पशु-पक्षियों का मांस तथा न जाने क्या क्या अशुद्ध व प्रदूषित वस्तुएँ आ मिलती हैं।

इलाहबाद में गंगा में यमुना भी आ मिलती है तथा उसका भी यही विवरण है। दोनों का मिलन महाप्रदूषण या महाविनाश का संगम है। बंगाल के हुगली नगर तक पहुँचकर तो इसका स्वरूप अति प्रदूषित अग्राह्य तथा उपेक्षणीय हो जाता है। परन्तु वहाँ के हिन्दू वहाँ की गंगा में डुबकी लगाकर, 'जय गंगा मैया' की का नारा लगाकर स्वयं को धन्य मान लेता है। यह उसकी विवशता है।

जल की गंगा की तरह वैदिक धर्म व वैदिक मान्यताओं का भी यही इतिहास है। इनका आरम्भ एक अरब, छियानवे करोड़, आठ लाख तिरपन हजार व एक सौ तेरह वर्ष पूर्व हुआ था। तब इनका आधार चारों वेदों के २०३७९ मंत्र ही थे। कालान्तर में अनेक ग्रन्थ, अनेक घटनाएँ, अनेक श्लोक, अनेक दोहे, अनेक पद लिखे गए व मूल ईश्वरीय विश्वासों, मान्यताओं व सिद्धान्तों में मिलते गए। आज हम इतिहास की हुगली के किनारे पर खड़े हैं। जहाँ यह निर्णय करना कठिन हो गया है कि शुद्ध वैदिक मान्यताएँ कौनसी हैं व अशुद्ध मान्यताएँ कौनसी हैं? जल की गंगा को शुद्ध करने की माँग उठ रही है व अरबों रु. का व्यय भी हो चुका है। परन्तु अभी तक एक प्रतिशत भी यह शुद्ध नहीं हुई। परिणामतः शुद्ध जल की इच्छुक प्रजा अशुद्ध जल को पीकर निर्वाह कर लेने को विवश है।

ज्ञान गंगा में मिलावट के विषय में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने उपदेश मंजरी के अमृत प्रवचन में मनुस्मृति में प्रक्षेप को इन शब्दों में स्वीकार किया है- 'जैसे ग्वाले लोग दूध में पानी डालते हैं उस दूध को बढ़ाते हैं और मोल लेने वालों को फंसाते हैं उसी प्रकार मानव धर्मशास्त्र की अवस्था हुई है। उसमें बहुत से दुष्ट श्लोक हैं। वे वस्तुतः भगवान मनु के नहीं हैं। यदि कोई कहे कि यह कैसे? प्रमाण यह है कि इन श्लोकों को मनस्मृति की पद्धति से मिलाकर कर देखने से वे श्लोक अशुद्ध दिखते हैं। मनु सदृश

श्रेष्ठ पुरुष के ग्रन्थ में अपने स्वार्थ साधने के लिए चाहे जैसे वचनों को डालना बिल्कुल नीचता दिखाना है।'

१९३२ ईस्वी में जापान व चीन के मध्य हुए युद्ध में चीन की दीवार तोड़ी गई थी तो उसमें एक पेटी मिली थी, जिसमें चीनी भाषा में लिखी गई पाण्डुलिपियाँ मिली थीं जो आज भी ब्रिटिश म्यूजियम में रखी हैं। उनमें एक पाण्डुलिपि में यह लिखा है कि भारत में मानव धर्मशास्त्र मनुस्मृति १२ सहस्र वर्ष पुराना ग्रन्थ है जिसमें ६८० श्लोक हैं। इस लेख के विपरीत जो मनुस्मृति आज उपलब्ध है, उसके २६८५ श्लोक हैं। मनुस्मृति के सम्पादक डॉ. सुरेन्द्र कुमार, गुड़गाव के अनुसार इनमें से केवल १२१४ श्लोक ही मनुजी के हैं, जबकि शेष १४७१ श्लोक मनु के पश्चात् कई रचनाकारों ने विभिन्न अवसरों पर मिलाए हैं। इसका एक प्रमाण है कि मनुस्मृति में पर्दा प्रथा का वर्णन है परन्तु जब यह लिखी गई थी तब वैदिक समाज व वैदिक मान्यताओं का साम्राज्य था। पर्दा प्रथा का प्रचलन न था। सीता, सावित्री, पार्वती, द्रौपदी व शकुन्तला इसके प्रमाण हैं। मनु महाराज को वर्तमान जन्मना वर्ण व्यवस्था का अपराधी मानकर स्वार्थी नेता उसकी निन्दा करते हैं व मनुस्मृति को सार्वजनिक रूप में फाड़ने अथवा जलाने का उपक्रम भी करते हैं। इस ग्रन्थ में वर्ण व्यवस्था का प्रतिपादन कर्मों के आधार पर उपलब्ध है। यही प्रतिपादन मूल ग्रन्थ का अंश है जबकि स्वार्थी व अज्ञानी लोग उसके प्रक्षिप्त अंशों के आधार पर मनु विरोधी बन बैठे हैं। परिणाम समाज में द्वेष व दूरियाँ व्याप्त हैं। समरसता का अभाव है। मनु का विरोध क्यों? शीर्षक से आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित व डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी द्वारा लिखित लघु पुस्तक ऐसे तथा कुछ प्रक्षिप्त अंशों का परिचय कराती है।

सुकवि कालिदास के साहित्य में भी प्रक्षेप हुआ है। उनका एक ग्रन्थ है- 'कुमार संभव' जिसका अर्थ है कुमार का जन्म। इसमें १७ सर्ग उपलब्ध हैं परन्तु

इनमें कालिदास विरचित सर्ग आरम्भिक केवल ८ ही माने जाते हैं। मल्लिनाथ की टीका ८ सर्गों तक ही है। विवरण टीका के प्रणेता नारायण पाण्डेय के अनुसार कालिदास का लक्ष्य इस महाकाव्य द्वारा पार्वती द्वारा शिव के चित्त का आकर्षण प्रकट करना था जो कुमार कार्तिकेय के जन्म का कारण बना। अतः अष्टम सर्ग में समागम के वर्णन के साथ ही महाकाव्य की समाप्ति मान लेना उचित है। अवशिष्ट ९ सर्ग किसी परवर्ती महाकवि ने जोड़े हैं। इन सर्गों में कालिदास की लेखनी का वैशिष्ट्य नहीं मिलता। इनकी भाषा शैली प्रथम ८ सर्गों की तुलना में हीन है।

वस्तु-निरूपण कालिदास जैसे महाकवि की विशेषता के अनुरूप नहीं है। पुनरुक्तियाँ व अश्लीलता भी इनमें मिलती है। यह तथ्य प्रो. माधव वल्लभ त्रिपाठी ने अपनी पुस्तक संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास के पृष्ठ ९५ प्रथम संस्करण २००५ में स्वीकार किया है। इससे सिद्ध है कि केवल धार्मिक ऐतिहासिक ग्रन्थों में ही नहीं अपितु साहित्यिक ग्रन्थों में भी मिलावट हुई है।

पंडित श्रद्धाराम फिल्लौरी ने सन् १८७९ ईस्वी. में एक आरती लिखी जो आज लगभग समूचे भारत में प्रचलित हो गई है। इसकी अंतिम पंक्ति इस प्रकार है 'श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा।' आप उदयपुर के दुर्ग के बाहर स्थित जय जगदीश मन्दिर में पत्थरों पर अंकित इसी रूप में पढ़ सकते हैं। परन्तु आज इस आरती की दो पंक्तियाँ अधिक

मिलती हैं। आज कहीं अंतिम पंक्ति इस प्रकार मिलती है- 'कहत हरिहर स्वामी सब कुछ है तेरा' तो कहीं यह दूसरी प्रकार से गाई जाती है- 'कहत शिवानन्द स्वामी सब कुछ है तेरा।' श्रद्धाराम फिल्लौरी की रचना में हरिहर स्वामी के शिष्यों ने अपने गुरु का नाम घुसेड़कर तथ्य के साथ खिलवाड़ किया तो शिवानन्द स्वामी अथवा उनके शिष्यों ने तथ्य को बदलने का दुस्साहस किया। लोकैषणा के कारण व्यक्तियों द्वारा मूल आलेख में किसी मिलावट का यह ज्वलन्त उदाहरण है। किसी आर्य समाजी सुकवि ने एक सुन्दर गीत लिखा था-

देखा न कोई देवता प्यारे ऋषि की शान का,
सिर पर सही मुसीबतें सोचा भला जहान का।

विस्तारभय से इसे पूरा उद्धृत न करके इसकी अंतिम पंक्तियाँ हम उद्धृत करते हैं जो इस प्रकार है-

ब्रह्मा से लेकर जैमिनि तक, करते रहे जिस काम को,
शैदा बनाया देश को वेदों के उस फरमान का।

मेरे नगर के एक दानी आर्य ने दान देकर संध्या व हवन के मंत्रों तथा कुछ भजनों को एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित व वितरित किया। तो मेरा ध्यान पुस्तक के उस पृष्ठ पर अटक गया जिस पर उपरोक्त गीत पूरा छपा था। इस गीत के उपरोक्त ब्रह्मा से जैमिनि तक... शब्दों के स्थान पर मुझे 'बर्मा से जर्मनी तक करते रहे जिस काम को' शब्द पढ़ने को मिले। जिस किसी ने इस पुस्तक के प्रूफ देखे पढ़े होंगे उसे वैदिक इतिहास व वैदिक मान्यताओं का तनिक भी ज्ञान न रहा होगा तथा उसने वर्तमान सृष्टि के प्रथम पूर्ण ऋषि ब्रह्मा जी तथा महर्षि दयानन्द से पूर्व में अन्तिम हुए ऋषि जैमिनि के विषय में कुछ भी सुना-पढ़ा व जाना न होगा। परन्तु फिर भी उसे प्रूफरीड़िंग का कार्य दिया। यदि अज्ञान से किए इस बौद्धिक प्रदूषण को न रोका गया तो इसका भयंकर परिणाम यह निकलेगा कि ऋषि ब्रह्मा व ऋषि जैमिनि के नाम गुम हो जायेंगे व महर्षि दयानन्द को बर्मा व जर्मनी का अनुयायी धीरे-धीरे मानने लगेंगे।

शुद्ध वेदवाणी की सुरक्षा हेतु प्राचीन ऋषियों ने एक दुर्ग का निर्माण किया था जिसका नाम रखा था- वेद चर्चन दुर्ग। इस विधि में वेद मंत्रों के विकृत पाठ की आठ रक्षा पंक्तियों की नियुक्ति की गई। इन्हीं पाठों ने वेदमंत्रों में प्रक्षिप्त अंशों की मिलावट करने वालों से वेदमंत्रों की पवित्रता की सुरक्षित रखा है। इस पर भी स्वार्थी व अज्ञानी पौराणिकों ने यजुर्वेद के ३२/३ मंत्र को विकृत करने का प्रयत्न किया। उन्होंने **'न तस्य प्रतिमा अस्ति'** को **'नतस्य प्रतिमा अस्ति'** कर दिया जिसका अर्थ यह किया- नम्र रूप धारण करने वाले उस ईश्वर की प्रतिमा है। इस प्रक्षेप पर मैसूर में एक ऐतिहासिक शास्त्रार्थ हुआ था जिसमें क्रान्तिकारी आर्य संन्यासी स्वामी काव्यानन्द ने इस मन्त्रांश को **'न तस्य प्रतिमा अस्ति'** के शुद्ध रूप में ही रखा। उन्होंने पूर्वोक्त पाठों के द्वारा मंत्र को प्रस्तुत करके यह सिद्ध किया कि न उदात्त है, तस्य स्वरित है तथा उदात्त व स्वरित की संधि नहीं होती उदात्त व उदात्त की, अनुदात्त व अनुदात्त की, एवं स्वरित व स्वरित की संधि हो सकती है। सवर्णी होने पर तो उदात्त व अनुदात्त की संधि हो सकती है। इसलिए यह पाठ नतस्य न होकर न तस्य ही है। **क्रमशः .....**

- पंडित इन्द्रजित् देव
प्रथम भाग

अनुकरणीय दान

यह बात नितान्त सत्य है कि कितनी भी कल्पनाएँ की जायें, कितनी भी योजनाएँ बनायी जायें परन्तु उनको मूर्त रूप देने के लिए अर्थ सहयोग की आवश्यकता सर्वविदित है। ईश्वर की कुछ ऐसी कृपा हुई है कि जब-जब भी अर्थाभाव में कार्य अटका है तब किसी न किसी आत्मीयजन ने सहयोग देकर कार्य को आगे बढ़ाया है। सीलीगुढ़ी के अत्यन्त प्रसिद्ध वैदिक परिवार के सदस्य श्री अशोक आर्य जी और हांसी वाले परिवार के रूप में प्रसिद्ध आर्य परिवार के सदस्य जो अभी दिल्ली में विराजते हैं श्री सुरेन्द्र कुमार जी आर्य, दोनों सपत्नीक नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र के अवलोकन हेतु हमारी प्रार्थना पर पधारे थे। एक समस्या यहाँ आने वाले दर्शकों को, पर्यटकों को प्रायः खलती है कि गुलाब बाग के मुख्य दरवाजे से नवलखा महल तक उनको पैदल आना पड़ता है क्योंकि ऑटो वाहन का गुलाब बाग में प्रवेश वर्जित है। आने वाले अधिकांश लोग वरिष्ठ नागरिक ही होते हैं। अतः उन्हें तकलीफ होती है। इसके अतिरिक्त भी जो अतिथि नवलखा महल में एकाध दिन रुकने के लिए आते हैं उनको सामान के साथ आने में परेशानी होती है। अतः विचार यह बन रहा था कि सम्भव हो तो एक गोल्फ कार्ट प्रकार का वाहन ले लिया जाये जिससे इस समस्या का हल हो जाये और सूचना देने पर गेट से नवलखा तक जरूरतमन्द दर्शकों को लेकर आया जा सके। इस पर लगभग पाँच लाख रु. अनुमानित व्यय है। परन्तु श्री सुरेन्द्र जी आर्य और श्री अशोक जी आर्य ने इसका हल निकाल दिया और बड़ी उदारता पूर्वक पाँच लाख रु. इस कार्य के लिए देने की सहर्ष घोषणा की। न्यास की ओर से और हमारी ओर से ऐसे दानदाताओं का हृदय से आभार।

वेद-वृक्ष निर्माण का मार्ग तैयार– इसी क्रम में सिलीगुढ़ी के उक्त परिवार से ही श्री अशोक आर्य जी के दो भाई श्री सुभाष जी आर्य एवं श्री सत्येन्द्र जी आर्य सपरिवार यहाँ पधारे। NMCC का अवलोकन कर उनकी प्रसन्नता का पारावार नहीं रहा। बच्चों ने विशेष रुचि ली। प्रिय आयुष आर्य ने एक ऐसी घोषणा की जिसे सुनकर आर्य परिवार निश्चित रूप से प्रेरणा प्राप्त कर सकेंगे। उन्होंने कहा कि मैं इतना प्रेरित हुआ हूँ कि मैं सत्यार्थ प्रकाश पढ़ना प्रारम्भ कर दूँगा। उनको हमारी ओर से बहुत-बहुत साधुवाद। इसी प्रकार श्रीमती सत्येन्द्र जी ने उदारभावों को प्रदर्शित करते हुए यहाँ जो वेद वृक्ष बनाया जायेगा, उसके लिए दो लाख इक्कावन हजार रु. का दान घोषित किया। अत्यन्त विनम्र भाव से हम इस पूरे परिवार के प्रति नमन करते हैं। निश्चित रूप से ऐसे आत्मीयजन न होते तो NMCC कभी आकार नहीं ले पाता।

स्वदेशी के प्रबल समर्थक महर्षि दयानन्द सरस्वती

विवेक आर्य

स्वतंत्रता, स्वराष्ट्र, स्वभाषा, स्वसंस्कृति के प्रबल समर्थक महर्षि दयानन्द सरस्वती ऐसे दिव्य महापुरुष थे जिनका सम्पूर्ण चिन्तन और कार्य जहाँ आध्यात्मिकता से ओतप्रोत था, वहीं राष्ट्र उनके लिए प्रथम था। व्यक्ति की सर्वांगीण उन्नति स्वयं से ही प्रारम्भ होती है। किसी भी क्षेत्र की पराधीनता व्यक्ति समाज और राष्ट्र के लिए अधोगति का कारण बनती है। पराधीन व्यक्ति चाह कर भी कुछ नहीं कर पाता। महर्षि दयानन्द सरस्वती और आर्य समाज ने भारतवासियों में राष्ट्रीय भावना भरने और देश प्रेम जागृत करने की पहल की। भारत की आधुनिक राजनीतिक प्रगति के कर्णधारों को राजनीतिक स्वतंत्रता के संघर्ष और सार्वजनिक सेवा की प्रेरणा ऋषि दयानन्द और आर्य समाज से मिली है।

स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास लेखकों के द्वारा यह बात कई जगह स्वीकार भी की गई है। कांग्रेस इतिहास के लेखक श्रीयुत् सीताभिपट्टारमैया ने कांग्रेस इतिहास के प्रारम्भ में ही इस बात को स्वीकार किया है कि 'ऋषि दयानन्द ही पहले महापुरुष थे जिन्होंने स्वराज्य की आवश्यकता पर बल दिया और देशवासियों के हृदय पर उसकी महिमा अंकित की।' इतिहासकार सुखसम्पत्ति राय भण्डारी ने लिखा की 'महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भारतवासियों में राष्ट्रीयता के भाव भरे और स्वराज्य का मंत्र दिया। उन्होंने यह दिखलाया कि भारतवासी केवल सुराज्य ही नहीं चाहते बल्कि स्वराज्य चाहते हैं।'

पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह प्रायः यह कहते थे कि 'ऋषि दयानन्द मेरे धार्मिक गुरु हैं।' विदेशी विद्वान् डी. बैबले ने कहा 'वर्तमान स्वतंत्र भारत की वास्तविक आधारशिला महर्षि दयानन्द ने ही रखी थी।' फ्रांस के प्रसिद्ध विद्वान् रोम्या रोलॉ ने कहा था 'भारतीय राष्ट्रीय पुनर्जागरण के मसीहा ऋषि दयानन्द हैं।' डॉक्टर एनी बेसेंट ने अपनी पुस्तक 'इण्डिया ए नेशन' में लिखा है 'स्वामी दयानन्द जी ने सर्वप्रथम घोषणा की थी कि 'भारत भारतीयों' के लिए है।' स्वामी जी का मानना था कि स्वराज्य ही वैदिक संस्कृति का आदेश है और प्रत्येक देश के निवासी का अधिकार है कि वह अपने देश का शासन स्वयं संचालित करें।

जिन सामाजिक और धार्मिक कारणों से भारतवर्ष का पतन हुआ उनका नाश करने में महर्षि दयानन्द ने बड़े जोर का प्रहार किया। उन्होंने भारतवर्ष में जो धार्मिक और सामाजिक क्रान्ति की उसने उस भूमिका को तैयार किया जिस पर आज स्वराज्य की इमारत खड़ी की जा रही है। भारत के राष्ट्र निर्माताओं में स्वामी दयानन्द का नाम अपना विशेष स्थान रखता है।

महर्षि विदेशियों के राज्यों को पूर्ण सुखदायक नहीं मानते थे। वे सत्यार्थ प्रकाश में अपनी इस धारणा को इस प्रकार व्यक्त करते हैं 'कोई कितना ही करे परन्तु

जो स्वदेशी राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है।' भारत को विदेशियों की राजनीतिक परतंत्रता से मुक्त कराने के लिए ऋषि की जो धारणा थी वो बाद में देश के कर्णधारों के हृदय में अंकुरित हुई और उनके महान् तप, त्याग और बलिदान से पल्लवित होकर भारतवर्ष के विदेशियों की दासता से मुक्त होने का कारण बनी।

महर्षि दयानन्द सरस्वती विदेशी राज्य को देश पर एक बड़ा अभिशाप समझते थे। देश की राजनीतिक परतंत्रता से उनके हृदय में पीड़ा थी। जिसका आभास उनके निम्न उद्‌गार से मिलता है। 'जब अभाग्य से देशवासियों के आलस्य, प्रमाद, परस्पर के विरोध से अन्य देशों में राज्य करने की तो क्या ही कहें, आर्यावर्त्त में भी आर्यों का अखण्ड स्वाधीन राज्य इस समय नहीं है। जो कुछ है सो भी विदेशियों के आधीन है। कुछ थोड़े राजा स्वतंत्र हैं।' इन विकट परिस्थितियों से देश को निकालने के लिए महर्षि दयानन्द तथा उनके अनुयायियों ने अपने अन्तिम श्वांस तक संघर्ष किया।

कितने ही ऐसे क्रान्तिकारी थे जो भले ही सीधे तौर पर आर्य समाज से नहीं जुड़े थे लेकिन आर्य समाज मन्दिरों में, गुरुकुल में और डीएवी स्कूलों में जहाँ शरण लेते थे वही उनके प्रांगण में बैठकर आजादी के आन्दोलन की रणनीति बनाते थे।

आर्य समाज ने महर्षि दयानन्द सरस्वती की २००वीं जयन्ती वर्ष के अवसर पर विश्वव्यापी कार्यक्रमों का शुभारम्भ भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के कर कमलों से महर्षि की जयन्ती के शुभ अवसर पर १२ फरवरी २०२३ को दिल्ली के इन्दिरा गाँधी इन्डोर स्टेडियम में किया है। ये सुखद संयोग है जब पूरा देश आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है। तभी हम इस महामानव को याद करते हुए उनके कार्यों को याद कर रहे हैं। साथ ही स्वराष्ट्र, स्वभाषा, स्वतंत्रता के समर्थक बनकर इन्हें अपने दैनिक जीवन का हिस्सा बनाने का संकल्प भी दोहरा रहे हैं।

- चलभाष 91-9013586714

आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश (म्याँमार) स्मृति पुरस्कार

"सत्यार्थ-भूषण" पुरस्कार

₹ 5100

कौन बनेगा विजेता

- न्यास की मासिक पत्रिका सत्यार्थ सौरभ का सदस्य होना आवश्यक है।
- हल की हुयी पहेली अन्तिम तिथि से पूर्व न्यास कार्यालय में पहुँचे यह सुनिश्चित करें।
- अपना सत्यार्थ सौरभ सदस्यता क्रमांक हल की हुयी पहेली के ऊपर अवश्य अंकित करें।
- लिफाफे के ऊपर 'सत्यार्थप्रकाश पहेली क्रमांक' अवश्य अंकित करें।
- आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
- विश्व भर के लोगों से सत्यार्थ सौरभ मासिक पत्रिका के अन्तर्गत 'सत्यार्थकाश पहेली' में भाग लेने का अनुरोध है।
- वर्ष भर में एक (१) के स्थान पर चार (४) पुरस्कारों के साथ ही नियमों में सकारात्मक परिवर्तन कर ऐसी व्यवस्था की गई है कि वर्ष में एक बार भाग लेने वाले/अथवा एक बार ही सफलता प्राप्त करने वाले भी पुरस्कार से वंचित न हों।
- पहेली का सही हल प्रेषित करने वाले प्रतिभागियों को ४ भागों में विभक्त किया जावेगा।
  - (अ) सम्पूर्ण वर्ष में समस्त १२ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (ब) सम्पूर्ण वर्ष में ८ से ११ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (स) सम्पूर्ण वर्ष में ५ से ७ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (द) सम्पूर्ण वर्ष में १ से ४ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
- वर्षान्त में प्रत्येक समूह में से एक विजेता का चयन (लाट्री द्वारा) किया जाकर पुरस्कृत किया जावेगा।
- पुरस्कार राशि क्रमशः ₹५१००, ₹११००, ₹७०० तथा ₹५०० होगी। अन्य सभी नियम पूर्वानुसार।

₹5100 का पुरस्कार प्राप्त करें

"सत्यार्थ सौरभ" के सदस्य बनें

अविलम्ब बहुप्रशंसित पत्रिका 'सत्यार्थ सौरभ' के सदस्य बनें, जो पहले से सदस्य हैं अपना नवीनीकरण करावें और सत्यार्थ सौरभ में छप रही 'सत्यार्थप्रकाश पहेली' में भाग लेने की पात्रता प्राप्त करें और पावें ₹5100 का पुरस्कार।

पूर्ण विवरण इसी पृष्ठ पर देखें।

सोशल मीडिया पर यूँ ही इधर-उधर देख रही थी कि एक समाचार एक वीडियो क्लिपिंग के साथ-साथ दिखा। गणतंत्र दिवस किसी विद्यालय में मनाया जा रहा था और बच्चे एक फिल्मी गीत के ऊपर नृत्य प्रस्तुत कर रहे थे। यह देख कर मन विषाद से भर गया। गणतंत्र दिवस इसलिए मनाया जाता है कि इस दिन हमारे देश का संविधान लागू हुआ था। यह अत्यन्त पवित्र दिन है। जहाँ इस दिन बच्चों को संविधान के प्रावधान, संविधान के पालन की सुनिश्चितता के बारे में बताया जाना चाहिए कि किस प्रकार इस संविधान के तले ७५ वर्ष से यह देश सफलतापूर्वक चल रहा है, जहाँ बच्चों को संविधान के अन्तर्गत दिए गए न केवल अधिकारों के बारे में बताया जाना चाहिए बल्कि उन स्वतंत्रता दिवस को ही नहीं, अन्य-अन्य त्योहारों को मनाते समय भी देखने में आती है। आजकल आप कोई भी उत्सव देख लीजिए उसके पीछे जो सन्देश है वह कहीं दिखाई नहीं देगा, केवल नाच गाना मस्ती दिखाई देगी।

उदाहरण के लिए आप जन्माष्टमी के त्योहार को देख लीजिए। जन्माष्टमी वह पावन दिन है जब भगवान श्री कृष्ण जी महाराज ने जन्म लिया था। इस दिन को किस प्रकार मनाना चाहिए? सही तरीका तो यह होगा कि श्रीकृष्ण के जीवन चरित्र को अनेक प्रकारों से दिखाया जाए, सुनाया जाए ताकि धर्म की स्थापना के लिए जिस प्रकार उन्होंने संघर्ष किया और पूरा जीवन इस हेतु लगा दिया, उसके बारे में हम लोग जानें, विचार करें और उनके जीवन के उन प्रसंगों से प्रेरणा

संस्कृति या विकृति

कर्तव्यों के बारे में भी बताया जाना चाहिए, जिनकी आज बहुत कम चर्चा की जाती है। बच्चों को शायद पता ही नहीं होगा कि संविधान में देश के नागरिकों से यह अपेक्षा की गई है कि वह अपने कर्तव्यों के पालन के लिए भी सचेष्ट रहेंगे। कितनी बड़ी विडम्बना की बात है कि यह सब न बताकर फिल्मी गानों पर नाच कराए जा रहे हैं। इस सब में किसका दोष है? क्या इन पर कोई कार्यवाही होगी? नहीं! बच्चे खुश, अध्यापक खुश, यहाँ तक कि माता-पिता खुश कि उनके बच्चे ने कितना बढ़िया नृत्य प्रस्तुत किया। परन्तु विवेचना की दृष्टि से देखें तो यह सांस्कृतिक विकृति ही है जो केवल गणतंत्र दिवस, लें। जब हम सुदामा और कृष्ण की मित्रता के बारे में पढ़ते हैं तो बरबस आँखों से आँसू निकल पड़ते हैं। द्वारिका का सम्राट जब अपने बाल सखा के आने के बारे में सुनता है तो दौड़ करके उसे गले लगा लेता है। और जब उसकी दशा देखता है, उसके फटे हुए वस्त्रों को देखता है तो उस दृश्य का वर्णन नरोत्तम कवि निम्न प्रकार करते हैं-

देखि सुदामा की दीन दशा,
करुणा करके करुणानिधि रोए।
पानी परात को हाथ छुओ नहीं,
नैनन के जल सों पग धोए।।

इस घटना को क्या जन्माष्टमी पर कभी किसी ने

सुनाया है? क्या इससे मिलती प्रेरणा कि मित्रता किस प्रकार की होनी चाहिए और किस प्रकार से समृद्ध होने पर भी अपने अहंकार को बीच में ना ला करके अपने मित्रों की, उन मित्रों की जो कालक्रम में मोहताज हो गए हैं सहायता की जाए, किसी को स्पर्श करती है? श्रीकृष्ण का चरित्र वह ताकत रखता है कि इस देश को एक नई दिशा दे सके। परन्तु नहीं, हम क्या करते हैं केवल चौराहे पर एक ऊँची मटकी बाँध देते हैं और उस मटकी में माखन भर देते हैं उस मटकी को तोड़ने की प्रतियोगिता होती है बच्चे एक दूसरे के ऊपर चढ़कर जो सबसे पहले उसे तोड़ देता है उसे विजेता घोषित करते हैं। बच्चे खेलकूद कुश्ती करें यह तो समझ में आता है परन्तु जन्माष्टमी के पावन पर्व पर केवल मक्खन को याद कर लेना कि वह श्रीकृष्ण का प्रिय आहार था इससे तो काम नहीं चलता। आवश्यकता तो वही है कि उनके पुण्य प्रसंगों को दिखाया जाए, सुनाया जाए। ऐसा नहीं होता। इसीलिए इस देश में श्री कृष्ण के जीवन से कोई प्रेरणा भी नहीं लेता।

यही हाल हम रामनवमी पर देखते हैं। कहीं अगर रामलीला का मंचन भी होता है तो उसमें इस तरह की अलौकिक असम्भव घटनाओं को ही प्राथमिकता दी जाती है जिसके चलते विद्वान् और समझदार लोग यह कह देते हैं कि ऐसा कैसे हो सकता है? और एक नेरेटिव घड़ दिया जाता है कि श्रीराम हुए ही नहीं। इससे ज्यादा अफसोस की क्या बात हो सकती है?

आपने देखा होगा गरबा का त्योहार मनाया जाता है। यह देवियों की स्तुति का उत्सव बताया जाता है। यहाँ मैं इस बात पर कोई टिप्पणी नहीं कर रही की देवियों की पूजा का विधान कितना उचित है? परन्तु जो बात मैं कहना चाह रही हूँ वह यह है कि कुछ वर्ष पूर्व तक आपने देखा होगा कि इस अवसर पर कम से कम भजनों पर नृत्य हुआ करते थे। आज आप गरवा के पण्डाल में जाइए। एक से एक अश्लील गानों पर आपको नृत्य करते हुए जोड़े मिल जाएँगे और बहुत सी दूसरी ऐसी बातें देखने को मिल जाएँगी जिनसे समाज में विकृति ही पैदा होती है। कुल मिलाकर हम सांस्कृतिक विकृति का शिकार हो रहे हैं कि अपने उत्सवों को प्रेरणा का स्रोत ना बना करके, अपनी संस्कृति की उदात्त स्थिति को ना दिखा कर, हम केवल मनोरंजन को ही प्राथमिकता देते नजर आते हैं। यही सांस्कृतिक विकृति है जिस से छुटकारा पाने का प्रयास हम सभी को करना चाहिए।

श्रीमती दुर्गा गोरमात
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

श्री रतिराम शर्मा, श्री रामेश्वर दयालु गुप्त; गाजियाबाद, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री सुरेश चन्द्र आर्य, श्री दीनदयाल गुप्त, स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री भवानी दास आर्य, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री नारायण लाल मित्तल, श्रीमती आभा आर्या, श्रीमती शारदा गुप्ता, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, श्री सुधाकर पीयूष, आर्यसमाज गाँधीधाम, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, प्रो. आई. जे. भाटिया; नासिक, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती ओमप्रकाश वर्मा; जयपुर, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री दीपचन्द आर्य; बिजनौर, श्री खुशहालचन्द आर्य, गुप्तदान उदयपुर, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्री मोती लाल आर्य, श्री रघुनाथ मित्तल, श्री जयदेव आर्य, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, श्री नरेश कुमार राणा, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री वीरेन्द्र मित्तल, श्री विजय तायलिया, गुप्त दान दिल्ली, प्रो. आर.के.एरन, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टॉक, श्री विकास गुप्ता, श्री भारतभूषण गुप्ता, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री एम.पी. सिंह, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री विवेक बंसल, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, श्री लोकेश चन्द्र टांक, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरसेन मुखी, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई, श्री राजेन्द्रपाल वर्मा, वडोदरा, प्रिन्सीपल डी. ए. वी. एच. जेड. एल. सी. सै. स्कूल, दरीबा (राजसमन्द), आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, होशंगाबाद, श्री ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, नोएडा, श्री भरत ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, अहमदाबाद, श्री सुरेन्द्र कर्मचन्दानी, पुणे, डॉ. आनन्द कुमार शर्मा, नई दिल्ली, श्री रमेश चन्द्र गुप्ता, यू.एस.ए., श्री शुद्धबोध शर्मा; श्रीगंगानगर, श्री कन्हैया लाल आर्य, शाहपुरा, डॉ. सत्या पी. वार्ष्णेय; कनाडा, श्री अशोक कुमार वार्ष्णेय; बडोदरा, श्री नागेन्द्र प्रसाद गुप्ता, बगहा (बिहार), श्री गणेशदत्त गोयल, बुलन्दशहर (उ. प्र.), श्री पूर्णचन्द आर्य, कानोड़, श्री वेदप्रकाश आर्य; नई दिल्ली, श्री सत्यनारायण शर्मा; उदयपुर, श्रीमती राधा देवी-रतन लाल राजोरा; निम्बाहेड़ा, श्री सत्यप्रकाश शर्मा; उदयपुर, सुदर्शन कपूर; पंचकूला, श्री देवराज सिंह; उदयपुर, श्रीमती ललिता मेहरा; उदयपुर, श्री कृष्ण लाल डंग आर्य; हिमाचल प्रदेश, श्री जी. राजेश्वर (गौड़) आर्य; हैदराबाद, पुरुषोत्तम लाल मेघवाल; उदयपुर, श्री बलराम जी चौहान; उदयपुर, श्री राकेश जैन; उदयपुर, श्रीमती कमलकान्ता सहगल; पंचकूला, श्री अम्बालाल सनाढ्य; उदयपुर, श्री भँवर लाल आर्य; उदयपुर, श्री वेलजी धनजी भाई; महाराष्ट्र, श्री सज्जनसिंह कोठारी; जयपुर, श्री चेतन प्रकाश आर्य; जोधपुर, ठाकुर जितेन्द्र पाल सिंह; अलीगढ़, श्री घनश्याम शर्मा; जयपुर, श्री मानसिंह चौहान; डूंगरपुर, श्री अजय कुमार गोयल; पानीपत

कथा सरित

गुजरात प्रान्त के मोरबी राज्य के अन्तर्गत ग्राम कहें या नगर कहें, नाम है टंकारा। प्रतिदिन की भाँति आज भी सूर्यदेव निकले हैं, साधारण हलचल नगर में दिखाई दे रही है परन्तु जीवापुर मोहल्ला, आज इसका दृश्य ही विचित्र है। ढोल ताशे बज रहे हैं, लोग एकत्रित हैं, हर्षित हैं, उल्लसित हैं, मानो उनका रोम-रोम नृत्य कर रहा हो और आखिर क्यों ना हो। उनके सर्वप्रिय टंकारा नगर के जमींदार, सर्वाधिक सम्पन्न व्यक्ति व अपने व्यवहार से सबके दिलों को जीत लेने वाले श्री कर्षण जी तिवारी के यहाँ पुत्ररत्न ने जन्म लिया है।

यद्यपि आज किसी को यह नहीं पता कि भविष्य में यही बालक विश्व में अपनी पहचान बनाएगा और अज्ञान, अन्याय, अभाव और गुलामी से जूझते हुए भारत को एक नई दिशा दे कर के पुनः उस पथ पर अग्रसर कर देगा जिस पर चलकर वह विश्वगुरु के आसन पर आसीन हो सकेगा। यह न जानते हुए भी क्योंकि कर्षण जी के घर प्रथम पुत्र उत्पन्न हुआ है इसलिए चारों ओर खुशियाँ मनाई जा रही हैं।

माता अमृतबाई की प्रसन्नता का पारावार नहीं है। वे अपने बगल में सोए हुए नन्हे से बालक के सुन्दर मुख को लगातार निहार रही हैं। उन्हें बालक पर से नजर हटाना एक पल के लिए भी स्वीकार नहीं है। बालक के सिर पर उनका हाथ प्यार से फिर रहा है। इन्हीं माँ अमृत बाई को यह सौभाग्य प्राप्त हुआ है कि भारत के भाग्य विधाता को अपनी कुक्षि में ९ माह रखकर उत्तमोत्तम संस्कार देकर अब उसका लालन पालन करें।

कर्षण जी तिवारी पक्के शिव भक्त थे। उनके घर में भी प्रतिदिन पूजा-पाठ का क्रम चलता था और टंकारा में भी कुबेरनाथ का एक मन्दिर उन्होंने बनवाया था। जहाँ विशेष अवसरों पर विशेष पूजा होती थी। उन्होंने अपने पुत्र का नाम भी मूलशंकर रखा और बालक के नाम में शंकर जोड़कर वे अत्यधिक प्रसन्न भी थे। कर्षण जी का मन यही चाहता था कि बालक मूलशंकर पर ऐसे संस्कार पड़ें कि वह भी पक्का शिव भक्त बन जाए, इसीलिए थोड़ा बड़ा होने पर उनका आग्रह रहता था कि पूजा से सम्बन्धित उपवास आदि मूलजी करें। परन्तु माँ का मन अत्यन्त कोमल होता है और संभवतः अमृत बा का कुछ विशेष। कर्षण जी और अमृत बाई के बीच इस बात को लेकर के सदा मतभेद बना रहता था। माता चाहती थी कि बच्चे को उपवास का कष्ट न झेलना पड़े। उनकी पढ़ाई को लेकर के माता को कोई परेशानी नहीं थी अतः वह स्वयं भी मूल जी को प्रेरणा देती थी और जब मूल जी पढ़ रहे होते, तो बड़े प्यार से उनको निहारती रहती थीं। कौनसी ऐसी वस्तु थी जो मूल जी को सहज उपलब्ध न थी। साधारण माता-पिता की भाँति मूल जी के माता-पिता भी प्रसन्न थे कि वे अपने बच्चे की परवरिश बहुत अच्छे से कर रहे हैं। और इसमें कोई सन्देह भी नहीं। परन्तु मूल जी के मन मस्तिष्क में क्या चलता रहता था यह किसे पता था? **इतिहास साक्षी है कि ऐश्वर्यों के पलने में पला-बढ़ा यह बालक मूलशंकर ऐश्वर्य से बंध नहीं सका।**

शिवरात्रि की सुज्ञात घटना के पश्चात् मूल जी को पार्थिव पूजा में पूर्णतः अरुचि हो गई तो कुछ समय पश्चात्

छोटी बहन और प्यारे चाचा की मृत्यु हो गई। इन दोनों अवसरों पर मूलशंकर यही विचार करते रहे कि क्या मृत्यु सभी को आएगी? जबकि चारों ओर जगत् में प्रत्यक्ष यही देखा जाता है कि प्रतिदिन अनेकों शवों को देखने के पश्चात् मनुष्य के मन में यही रहता है कि उसको मृत्यु नहीं आएगी और यही कारण है कि जीवन के उद्देश्य को ध्यान में न रखते हुए वह मनमानी करने में लगा रहता है। परन्तु महापुरुषों की बात कुछ और होती है। छोटा सा बालक मूलशंकर इसी मृत्यु को देखकर के वैराग्य के पथ का पथिक बन गया।

पुत्र की यह वैरागी मनोदशा माता-पिता से छिपी नहीं रह सकती थी। पुत्र अपने मिलने जुलने वालों से इन सब बातों पर विचार-विमर्श करता था और इसका हल कहाँ मिल सकता है यह जानने के लिए उत्सुक रहता था। उसके यह प्रश्न-उत्तर, उसका यह वैराग्य भाव घूमफिर कर माता-पिता को प्राप्त हो जाते थे। चिन्तित माता-पिता ने इसका उपाय एक ही समझा कि मूल जी का विवाह कर दिया जाए। घर गृहस्थी की डोर में बंध कर वैराग्य के भाव इसके मन से तिरोहित हो जाएँगे।

घर में विवाह की तैयारियाँ जोरों से होने लगीं। मूलजी भी समझ गए कि उनको बन्धन में बाँधने की तैयारियाँ प्रारम्भ हो गई हैं। इन्हीं तैयारियों के बीच एक दिन बिना किसी से कुछ कहे अपने सुनिश्चित पथ पर यह किशोरवय बालक बढ़ चला। संसार के समस्त ऐश्वर्यों को ठोकर मार के संसार का उपकार करने मूलशंकर अपने पथ पर बढ़ते चले गए।

प्रस्तुति- नवनीत आर्य
नवलखा महल, उदयपुर

पूरा नाम-
चलभाष-

सत्यार्थप्रकाश पहेली- १२/२२

सत्यार्थ सौरभ सदस्य संख्या-

रिक्त स्थान भरिये- सत्यार्थप्रकाश जैसे महान् ग्रन्थ का स्वाध्याय कीजिए। (त्रयोदश समुल्लास पर आधारित)- पुरस्कार प्राप्त करिये

१	सा १		२	ल २			३ हा	३	
४ न	४	४	र ४	४	४	न ४		५	५ स
६	ता ६	६		७	७	द ७		८	सा ८

संकेत (बाएँ से दाएँ) ऊपर से नीचे न भरें।

१. बाइबल का मुख्य सिद्धकर्त्ता मत का आचार्य कौन था?
२. बाइबल के अनुसार परमेश्वर किसका बलिदान लेता और वेदी पर लोहू छिड़कवाता है?
३. सत्यार्थ प्रकाश के अनुसार ईसाइयों का ईश्वर कैसा मनुष्य था?
४. किसने ईसाइयों के ईश्वर के घर को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया?
५. कितने रुपये के लालच में ईसा के शिष्य ने ईसा को पकड़वाया था?
६. ईसाइयों के ईश्वर ने ऐयूब की परीक्षा किससे करायी?
७. बाइबल के अनुसार ईसाइयों का ईश्वर किससे कहता है कि घर बना दे, तो आराम करूँ?
८. बाइबल के शैतान ने किसको चालीस दिन तक दुःख दिया?

''विस्तृत नियम पृष्ठ २५ पर पढ़ें एवं ₹५१०० पुरस्कार प्राप्त करें।''

कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ मई २०२३

समाचार

होली का पर्व धूमधाम से मनाया

आर्य समाज नेमदारगंज द्वारा होलिकोत्सव के उपलक्ष में वैदिक झुमटा निकाला गया। जिसमें युवा साथियों ने मिलकर होली के कवियों के द्वारा लिखे गए सूक्तों को उपस्थित करके और होली गीतों को जिसमें देश प्रेम, सुधार, संस्कृति की रक्षा आदि के भाव थे, पूरे गाँव में घूम घूम कर प्रचार किया गया। श्री संजय सत्यार्थी के निर्देशन में मंत्री सर्वश्री रंजीत आर्य, अश्विनी-प्रधान, श्री लखीनारायण-कोषाध्यक्ष, हर्षवर्धन, वेद प्रकाश, राकेश, राहुल आदि मित्रों ने सहयोग किया। आर्य समाज मन्दिर में 'वेदों का डंका आलम में बजवा दिया ऋषि दयानन्द ने' गीत पर लोग झूमे। तबला वादक श्री फूलचन्द मांझी का सहयोग प्राप्त हुआ। अन्त में प्रसाद-वितरण और धन्यवाद ज्ञापन के बाद शान्तिपाठ के द्वारा कार्यक्रम का समापन हुआ। - सत्यदेव प्रसाद आर्य मरुत

महर्षि दयानन्द बोध दिवस एवं कक्षा १०वीं के विद्यार्थियों का विदाई समारोह मनाया गया।

आबूरोड़, १७ फरवरी २०२३। आज शहर के स्थानीय विद्यालय दयानन्द पैराडाइज आबूरोड़ में महर्षि दयानन्द बोध दिवस एवं कक्षा १०वीं के छात्रों के लिए आशीर्वाद एवं विदाई समारोह का आयोजन

किया गया। इसी के अन्तर्गत विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया। जिसमें प्रधानाचार्य प्रवीण आर्य ने १०वीं के विद्यार्थियों के साथ यज्ञ किया। इस समारोह में जूनियर कक्षा के छात्र-छात्राओं द्वारा ऋषि दयानन्द की स्मृति में सुन्दर गीत 'धन्य है तुझको ए ऋषि तूने हमें जगा दिया' की प्रस्तुति दी एवं विद्यालय के अध्यापकों श्वेता भट्ट, उत्तम सिंह, दिव्या मालवीय, मीनल शर्मा, सीमा रामानी तथा कैलाश आर्य के द्वारा प्रेरणादायक गीत 'वक्त है कम लम्बी मंजिल, तुम्हें तेज कदम चलना होगा' आशीर्वाद स्वरूप गाया गया। विद्यालय के अध्यापक एवं अध्यापिकाओं के द्वारा बालकों के लिए आशीष स्वरूप बातें बताई गई। विद्यालय के प्रधान मोतीलाल आर्य के द्वारा बालकों को आशीष दिया गया एवं १०वीं के विद्यार्थियों को उपहार स्वरूप ग्रुप फोटो दिया गया। समारोह के अन्त में विद्यालय के प्रधानाचार्य प्रवीण आर्य ने विद्यार्थियों को शुभकामनायें देते हुए बोर्ड परीक्षा में सफलता के लिए प्रेरणास्पद बातें बताईं तथा उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

नवसंवत्सर पर प्रभात फेरी के साथ यज्ञ एवं उद्‌बोधन

आर्य समाज हिरण मगरी, उदयपुर की ओर से दिनांक २२ मार्च २०२३ को नवसंवत्सर एवं आर्य समाज स्थापना दिवस पर चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को विविध कार्यक्रम आयोजित किये गये। प्रातः दयानन्द कन्या विद्यालय की छात्राओं के साथ आर्यजनों ने हिरण मगरी क्षेत्र में प्रभातफेरी निकाल नशामुक्ति, बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ का सन्देश दिया। समारोह के मुख्य वक्ता श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के अध्यक्ष श्री अशोक आर्य ने नवसंवत्सर एवं आर्य समाज की स्थापना के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज के माध्यम से नया धर्म या पन्थ नहीं चलाया ऋषियों की परम्परा को आगे बढ़ाया।

श्रीमती सरला गुप्ता के पौरोहित्य मे विशेष यज्ञ के पश्चात् आर्य समाज के संरक्षक डॉ. अमृतलाल तापड़िया के द्वारा ध्वजारोहण सम्पन्न हुआ। डॉ. शारदा गुप्ता, डॉ. गायत्री पंवार, सुभाष कोठारी, श्रीमती नूतन चौहान आदि ने यजमान बनकर यज्ञ में आहुतियाँ दीं। कार्यक्रम का संचालन आर्य समाज की मंत्री ललिता मेहरा ने किया। प्रधान भंवर लाल आर्य ने धन्यवाद ज्ञापित किया। - रामदयाल मेहरा

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर के न्यासी श्री महेश चन्द्र गोयल की सुपुत्री सौभाग्यकांक्षिणी अक्षरा गोयल का शुभ विवाह श्रीमान् सत्यनारायण जी अग्रवाल (उदयपुर निवासी) के सुपुत्र श्री आदित्य अग्रवाल के साथ १६ मार्च २०२३ को आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री (ग्वालियर) के पौरोहित्य में पूर्णतः वैदिक विधि विधान से सम्पन्न हुआ।

गोयल परिवार को न्यास के समस्त न्यासियों की ओर से हार्दिक बधाई और नव दम्पति को हार्दिक शुभाशीष। - अशोक आर्य, अध्यक्ष-न्यास

शोक समाचार

नहीं रहे डॉ. वेद प्रताप वैदिक

अन्तर्राष्ट्रीय वरिष्ठ मूर्धन्य पत्रकार एवं आर्य जगत् के विद्वान् डॉ. वेद प्रताप वैदिक के निधन पर नवलखा महल स्थित सभागार में शोक सभा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के अध्यक्ष श्री अशोक आर्य ने बताया कि डॉ. वेद प्रताप वैदिक का उदयपुर स्थित नवलखा महल से गहरा नाता रहा है। वे समय-समय पर यहाँ के कार्यक्रमों में पधारकर अपने विचारों का अग्र प्रसारण करते थे। हाल ही में दिनांक २६ एवं २७ फरवरी २०२३ को नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र के नव प्रकल्पों के लोकार्पण समारोह के अवसर पर भी डॉ. वैदिक जी यहाँ पधारे थे। डॉ. वैदिक अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी माननीय प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति एवं अन्य गणमान्यों के साथ कई देशों की यात्रा कर चुके हैं तथा कई देशों के राष्ट्राध्यक्षों के साक्षात्कार भी आपने लिये। डॉ. वैदिक जी के निधन से आर्य जगत् ही नहीं वरन् सम्पूर्ण पत्रकार जगत् एवं देश को अपूरणीय क्षति हुई है।

- भवानीदास आर्य, मंत्री-न्यास

Festive Greetings
Dollar
Missy
CHIC CASUALS
CHURIDAR | ANKLE LENGTH | CAPRI
CARRY ON MISSY
CAPRI
CHURIDAR
ANKLE LENGTH
| www.dollarglobal.in | Buy Online: www.dollarshoppe.in | Also available at all leading shopping portals
Dollar products are available in over 800 cities/towns and 100,000 MBOs across India | Govt. Certified STAR EXPORT HOUSE

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 March-2023 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2021-2023

जिस–जिस कर्म से तृप्त अर्थात् विद्यमान माता–पितादि पितर प्रसन्न हों और प्रसन्न किये जायें, उसका नाम 'तर्पण'। परन्तु यह जीवतों के लिए है, मृतकों के लिये नहीं।

सत्यार्थ प्रकाश चतुर्थ समुल्लास पृष्ठ ९९

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित
प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य
मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख | प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख | प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर